সঙ্গীত মুক্তাবলী। नशामि कार । নমামি কমলাং অনলাং অভুলাং ञ्चनाः युक्तनाः माठतः বন্ধে মাত্রং। স্থামলাং সরলাং স্থামিতাং ভূষিতাং वजनीर जन्नीर माजनर । , ८३ বঙ্কিমচল চটোপাধ্যায়। [क्य-लूमि] विविष्ठे श्राषाय-र्राति। কত প্রিরভয়, কে বুকিতে পারে, ख्य-जन्म हिंग. जननीत्रम ८४। श्रीमन श्रमन्त्र, मनविश-इतं, প্রীতিপূর্ণিত রূপ অমূপম রে। কিবা দূর দেশে, কিবা স্বপ্নারেশে, दरित से मृत्रिः, खनश-कन्दतः) खनक खननी, स्थ-व्यूनीमिन, বিরাজিত যে প্রথ-রচাকরে। किरा (पश्माणा, यह बाला-गणा, ছিল পুলিত যে বনে ধরে ধরে। खिश क्षपश्चिमी, (क्षय-क्रमलिमी, হ'লো বিকশিত খেই শ্বৰ-সরে।

ভাষত মানস-মরাশা বিহরে।
নেই পুণা দেশে, কল ভূলে হাসে,
কল-কানন এ কবনী-মাঝারে।

সে দেশের তরে, ছু নয়ন করে,

হৈরি ভগ্ন দশা স্থাক্ষ বিদরে। ৫২ সানকচন্দ্র মিজ।

> [বঙ্গভাষার প্রতি।] (এক বিন হবে বলি—হার)

বেহাগ—আড়াঠক।। একাকী কামনে বসি, কে ভূমি বল রমণি। সভাব স্থানর অতি, মব রসে রস্বতী

শত কোটি চক্ত-জিনি প্রভাময় যুথখানি ৷ নাহি কোন অল্ডার মণি মুক্তা চন্ত্রহার,

লাবণা তবু অপার, বনফুলে সুশোভিনী। বাজে মলিন বেশে, হল কি ভাবিভ বসে

विवास मनिन दर्दण, दल कि ভाविष्ठ वरम, नश्म-छान वाल ८७८म, दलाम श्राट्य विस्नामिनी ।

ছাড় এ জীৰ্ণ বাঁশি তরা লহ মান্য অসি,

শামি যাহা ভাল বানি, দাজ রণ-বিলাদিনী । পথিক বলে মাছভাবা, হায় তোমার এ চুর্ফশা,

পথিক বলে মাতৃভাবা, হায় তোমার এ চ্ছশা,
কত দিনে মনের জাশা, পূর্ণ হবে নাহি জানি ৷ ৫৩

সানলচন্দ্র মিত্র।

(मूजगामन वाहेन मद्दक - ১२४७ मान।)

वाषाल-बाड़ार्डका। ছিল গো ভারত তব একই অধিকার।

ভাছেও বঞ্চিতপ্রায় হইলে এবার ঃ

শবিচার উৎপীড়নে, महित्न भंतान-मान,

মুক্তকণ্ঠে বাধীনতা, ছিল তব কাঁদিবাব। क्थ-मानामाल महि. " फ्रांशन काहिमी कहि,

धकरे छेपात्र हिन, माहिशादि गछिनात । এমনি কপাল ভোর, তথদাহে দহি ঘোর,

সে যোর ভাগের কথা, কহিতে নারিবে আর । ৫৪ শীতলাকান্ত চট্টোপাব্যায়

बामश्रमांनी द्व ।

খন বে জোল কি বিবেচনা ! (আহা) রাজমাতা এ ভারত করেন পরের আরাধনা।

श्राविमीत यु:चं त्नर्थ, त्जात कि श्रथ श्रा मा ।

ক্ষমলা ধন তার, পেছে চরি তাই ত ভার এ যাতনা।

दक्त दर अमन क'ल दक्त छ द्यन जान ना ।

দেশী গাগার ফেলে দিয়ে গেতে চাও বিদেশী থানা।

হ্যাট কোট পেন্ট্রন ভাল, ধুতি চাদর ভাল বাংগে না।

থাবাপ পরের লও রে বেছে, ভালওলি কেন শিথ না। ৫৫

হাধানাথ নিত্র।

জাতীয় সঞ্চীত।

কালেভড়া—আড়াঠেকা।

এস হে ভারতবাদী প্রীতির কুম্বন-হারে,

পৃঞ্জিব সকলে মিলি বীণাপাণি দারদারে! ওঠ বাল্মীকি ব্যাস, ভবভূতি কালিদাস,

বাজাও ভৈরবে বীণা গভীর মেঘ-মল্লারে।
ওঠ জয়দেব বঙ্গে, মধুর মুরলী-সঙ্গে

বাজাও মধুর তানে মূজ্ বসভবাহারে !

কেন রহিলে নীরবে, পাও একতানে সবে,

জাগা'য়ে ভারত স্থা গিরি বন পারাবারে। ৫৬ গোবিকচন্দ্র দাস।

মুলতান—আভাঠেকা।

र दा प्राप्ते की बीचा का गरांकरी

বছ দিন হ'তে বে ভাই এইানা অমবাপুরী,

জাগের নাহি দে কিছু ঐবর্ণা রূপ-মাধ্রী। অস্তব দক্ষার বেশে, প্রবেশি ত্রিদিব-দেশে

লুটিয়াছে বছাগাব-কহিন্দৰ গে'ছে চুবি।

দেবভার শ্বধা যাহা, দানবের ভোগে ভাহা,

कड कडे कमरतत—बाहा जाहा मित मिति !

সহে না পরাণে আর. এ যাতনা জনিবার,

এস ভাই একবার সবে প্রারপর করি—

ভাগা-বিছু নেবতাব, / নছবন্ধ পর্যে তার—

উদ্যদ-মন্দ্ৰবে মথি কাশার বাপ্তকী ধরি।

डेंडिट्न टन बेहानड, वन नष्ट मंड मंड,

नहेश भग्रठ-कृष्ठ छेतिरत (म श्लंबदी ।

সঙ্গীত মূভাবলী। 60 विन छेटी हनाहन, वित्र कर्छन छन,

तम मा कि छत्र छाएइ १ छाछिछा "दाँछि कि मति"। ०१ **्राविमध्य गांग**।

[क्यक्मि]

कः नाष्ठ-त्थमते। ।

জননী জন্মভূমি পূৰ্ব ভূমি মহীতলে। পূজিব পা-ছথানি আজি মোরা অঞ্চল্লে।

জানি না মা কেমন জামরা অভাজন, তবু মা পালিতেছ করজলে রাখি কোলে।

माहि मा जरक रत. नचन क्रांक्त, नित छाडे छक्ति-कृत्न श्रामन शर-कम्पता।

স্বদয়ের ছিল্ল ভারে, ভাকি আৰু মা ভৌমারে, ফ্রনতে ভাত' ভূমি কুল খেত শতনলে। ৫৮

কালীপ্রসর ঘোষ

[আবাহন ।]

কাণি-একতালা।

উর খো কল্প-কাননে।

छेत्र या वानि वीनानानि

छैत था वन-विस्मालिसी आख.

वीषात्र मध्य मिःषदम ।

আছে আঁথি নাহি দেখি ভায়, জীবিত না মৃত, হা কি দায়,

জীবনে জীবনী দেও মাতঃ, তাড়িত-তেজ-কুরণে। ৫৯ কালীপ্রসন্ন ঘোষ।

বাগেছরী—জলদ তেতালা।

রে বিধি ! কেন আমারে, নানা বত্ন কলভাবে, ভূষিত করিয়াছিলে।

[ভারতোজি।]

ভূষিত কার্যাছলে। এতেক স্বয় ঘদি, না হ'তে ভূমি বে বিধি,

ছিম্ব ড্বে সিদ্ধ কলে, আদরে ড্'করে তুলে, বিমালি-কোলেতে কেন আমারে ভাপিলে।

আৰিতে। না নিৰ্ব্যাতিতে নানা জাতি দস্যদলে।

করিরে পরের দাসী, পরের অল প্রত্যানী,

তবে কেন ধরে বিধি, আবে মান বাড়াইলে ঃ আগ্রকুণ-নারী আমি, আগ্র-ধর্ম অস্ত্রগামী,

वनम-करवाल कृषि, आमारत नमर्नित्त ।

বিভ্ত ঐ বিভ্নীরে, কেন না ছ্বা'লে মোরে, घिछ मा धरे गर का र'ल ध मध छाल । ७०

मीननाथ वत्र।

(मिन्नी-मन्नवात ।)

আজি কিলের এ দিন ! করহ চিত্তন, ভারত-সম্ভতিগণ ৷

ষেই স্থবিখ্যাত স্থানে, ভরত-আদি ভূপগণে, আর্যাঞাতি যশ:-কীর্তি করিল স্থাপন, ভারতেরি ভাগ্য ক্রমে, আজি সেই পুণাভূমে,

व्यशीयती जिल्होतिया वहेरक यावन ।

জ্যোতিহীন আর্য্যজাতি, নাহি দে অস্তর-ভাতি,

অবীক আলোকে ভাই পুলকিত মন। পিভগণ যে প্রাদেশে, গায়িত বীরের বেশে,

আজি তথা নট্যাজে আর্ব্যের নন্দন।

शृक्षि यथा क्रिंग्सरत, भूकी भूका आही मरत,

যবন মেছেরে পদে করিল দলন ;

আজি আগাস্থত তথা, জাণভয়ে হেট্মাথা, भित्रमानि श्रीकरकार द्वारकति हत्तर ।

এ দীন দুখ্য মানদে, ভারিরা দীন প্রকাশে, পুরহীন ভীমার্জন, প্রকৃত বচন ৷ ৬১

शीननाथ वर्।

বসন্থ বাহার-একডালা।

জাধার ভারতে আলো কে আর জালিবে রে। আলোকিতে ছিল যারা, একে একে গেছে তারা,

ত্যজি যায় স্থথ-তারা, যেমন প্রভাতে রে।

বিদেশী-চাতক আসি, পিরিতেছে জল রে।

ছথে ভারতজননী, করিছে রোদন-ধ্বনি, शाताहरल मणि कली, रामम विशास रव।

আর কি চকোর হাদি, পিরিবে রে স্থারাশি,

পুরবে ভারত-শশী খেমন উদিলে রে।

ভারত বিহলগণ, গাবে কি মধুর গান,

ভারা পূর্বে যেমন, গাইত উল্লাসে রে।

ষে স্থাথের দিন হার, আসিবে কি পুনরাখ,

लनारव कि छवानव, ভावरछत मनी रव।

আঁধার ভারতে জালো কে জার জানিবে রে। ५২

অবিনাশচল মিতা।

(অফি হখনরী উলে-ছর।)

নলিত-আড়া।

যদি গাবে গাও বঙ্গে ছখের কাহিনী।

মিলিয়া সহজ্র পরে মাতাও মেরিমী ঃ

कामिनी-कामन-शारत, रमाझ ना वृवकशरन-

तमां जा देश का देश मित्रा दार्यका :

উদোধিয়া বাধুভাবে, স্বাগাও নিজিত স্বীবে,

পুলকে বঙ্গের অঞ্চে নাচক ধন্মী

मधीड मुख्यावनी। 40 আর তথ সহে না, দেখিলে যাতনা, দিবা নিশি দেখিতেছ তব্ও ভাব না; বঙ্গের বিলাপ গীত, উঠুক গগণে, जाञ्चल नवम-मीरत, वरत्वत जामिनी। ७०

जगरीश्रह रमन (रस पक पक पाकि-- इत ।) বিবিট-একভালা।

আর রে আর ভারতবাদী, আর সবে মিলে, व्यवि जावज-माठात ठद्रव-कमला। জাত রে মুবলমান ভাই, আজি জাতি-ভেদ নাই, এ কাজেতে ভাই ভাই, আমরা সকলে। ভারতের কাঞ্চে আজি, আয় রে সকলে দান্তি, घटत घटत विदान एक, मन गाडे जूला। আপে তোৱা পর ছিলি এখন তোৱা আপন হলি, वहें दब कदब शनाशनि, काहें काहें ब'रम । ভারতের বেমন মোরা, ও বে ভাই তেমনি ভোরা,

टिनाटिन येठ किंडू, काथा दग'रह हरता। আয় রে ভাই দবে মিলি, মাথি ভারতের ধুলি, এমন স্থার পবিত্র ধূলি, নাহি ভূমওলে।

এ ধুলি মন্তকে ল'ছে ভাহনতে প্রমন্ত হ'ছে, হিন্দু যবন কাজ করিব, জাভিভেদ ভূবো।

धरे धृणिट आकरत छाएमत, बारे श्रिटि बीजाम स्मातना,

ছিল ধন-ধান্তে ভরা, হ'ল এমন কপাল পোড়া,
স্বাভাবে হা হতোহন্মি, প্রতি ঘরে ঘরে।
এই দেশতে ভুলা হয়, এই ভুলা বিলাতে হার,
এই ভুলাতে কাপড় ভখায়, বোনে মাঞ্চেত্রীরে;
মাঞ্চেত্রীর হ'তে এসে, ঘরের টাকা নেয় রে গুলে,
এ বিকে দেশের ভাঁতি, স্নাহারে মরে।

এই কি লেশের ভালবাসা, তাঁতি ভাইদের এই দশা, তাদের এই হৃঃধ তোরা, দেখিদ কেমন করে; আয় রে ভেটা করি সবে, দেশী কাপড় বিক্রী হবে, নাজাব দেশী তাঁতি সবে, ধন-রছ-হারে।

ইংরাজ শিল্পী দেখ গিলে, বাঙ্গালীর টাকা নিলে, ্ তেতালা চৌতালার কেমন, শ্বংশ বিরাজ করে: (আর) বাঙ্গালী শিল্পী যারা, অনাহারে মরে তারা,

रमध्य जारमंत्र अ ग्रम्थमा, आन् रव रक्षमन करत्र। এক নমান জিনিবও হ'লে, যেটা ইংরাজের বলে,

तिनी बिनिय (इएए तिए, तिश कूनाकारत ; কেন কুলাঙ্গার হব, দেশের মোরা ধন বাড়াব,

श्रुर्थ दाथिव यज, दमनी दमाकाममादत ।

আর সবে হারে হারে, ভাই সকলের পারে প'ড়ে, (याटा) तमी लाटकत होका हर, यनिया मनारत :

বিলাতি ফাঁকিতে ভূলে, আর ঘেন না টাকা ফেলে, যতন যেন করে যাতে, দেশের টাকা বাড়ে। ৬৫

व्यक्तिक्यात एक

[নব্য বঙ্গের প্রতি] (ক্রানি কার রূপদাগরে—হর।)

एट छाडे किराव रनरा मिरन मिरन अभन इ'रन। ভবে অৰ্থ্য-কুলে জনম ল'য়ে, সকলই কি ভূলে গৈলে ?

किरम रव छाइ अमन इ'ल, विमा वृधि नकन श्रम,

গুরে কপাল ভেঙ্গে এমন করে কি যে পেলে,

स्टा हेस्सिड त्रवाटक छाहे दा किया निमि मत्क वर्षन ।

(७ छाडे) नारह शास विस्तिष्ठादा, दक्सन धक मृर्डि ध'रत,

(दिडांड) मिल मद भाग हिर्दिश मरन मतन,

ভবে বিনাভবে দেশের দশা একবাবও ভাই না ভাবিলে।

দেশী ভাঁতি কর্মকারে, অনাহারে ভাতে মরে,

(कृषि) निरमनी विनारमत (चैं एक कांस कांगे।'रम,

ভরে দেশের ভালবাদা নাইরে জনমিয়ে আর্যাক্লে। ইংরাজী নভেল পড়ে. বেড়াও নদা গর্ম করে,

ও ভাই অর্থ্য কবির গাঁখা বত জলে ফেলে,

অ ভাব দেখে তোমার, ভাই রে আমরা,

ভাবি সদা নয়নজলে। ৬৬ व्यक्षितीकृमात्र मख।

र्विली महवात ।]

ললিভ-একডালা।

কেন গো আনন্দে আজি দকলে মেতেছে।

বিজয়-প্ডাকা কেন বিমানে উভিছে ঃ আনন-বাজনা বাজায়ে বাজায়ে,

হিন্দু রাজগণ আদিতেছে ধেরে,

ভেটীতে কাহারে পুলকিত হ'রে,

নামা দিক হ'তে কেন গো আগিছে। হেরি কি বভা শোভার বাহার,

হাসিতেছে ধরা আনক্ষে অপার,

কিলের জানক হইল এবার...

তোপের ধানিতে ধরণী কাঁপিছে। কোপা স্বধীকেশ পাওবভারণ,

পাত্ৰ প্ৰাধান্ত প্ৰকাশ কারণ,

রাজ্পর কিছে পুন: আয়োজন,

এত কাল পৰে পুনং কি হ'তেছে ৷ ৬৭ কালীচরণ ছোম।

नकीं मुकावती। বেহাগড়া ৷ ও গান গাদনে—গাদ্নে—গাদ্নে; যে দিন গিয়েছে, দে আব ফিরিবে না, তবে ও গান গাস্নে। श्रुमस्य एवं कथा जुकान तरप्रस्कृत्म चात कांशाम्य । ७४ वरीस्याथ ठाकूत । विविष्ठ-अकाता । একবার তোরা মা বলিয়ে ভাক. क्षश्रकत्मत् अवन क्षृष्ठांक, दियाजि-लावान (कैंप्स ग'ल गांक, মুখ ডুলে আজি চাহরে ৷ मांफा मिथि তোরা আত্মপর ভূলি, श्वनत्त्र श्वनत्त्र भूषेक विस्नती, প্রভাত-গগণে কোটি শির ডুলি, निर्कार वाकि शहरत । निगदगाँठ कर्छ या वरल छाकित्स. द्यामाक हेडिटर बनल मिशिल." विभावकाष्ठि एक्टल मारतस्त त्यतिहल, मगमिक श्रद्ध हामिएव। দে দিন প্রতাতে নৃতন তথম, गुजन कीवन कडिटन वर्णन,

ब नरह काहिनी, ब नरह चलन,

वागित, तम मिन वागित ।

আপনার মাকে, মা ব'লে ভাকিলে,

আপনার ভা'য়ে হাদরে রাখিলে,

नव लालकाल नृत्त यांग करन, পুণ্য প্রেমের বাতাদে।

সেধার বিরাজে দেব আশীর্কাদ,

मा थाक कनर, मा थाक तिवान.

ঘুড়ে অপমান, জেগে উঠে প্রাণ,

বিমল প্রতিভা বিকাশে। ৬৯

ববীশ্রনাথ ঠাকুর।

ৰাম্বাল-চৌতাল।

কোথা গোমা ভিক্টোরিয়া মিনভি করি চরণে।

मा ह'रह मा क्यम शाता महारम ना कह मरम।

कर कड दारचंद्र कथा, जानाव कि मरनंद गुधा, দরা কর ও পো মাতা, তব দীন পুলগ্রে।

চারিলিকে হাহাকার, অসম্ভোবের নাহি পার,

শলভাবে বাঁচা ভার, কেমনে ধরি জীবনে ?

अस्थार माहि ठाहे, दश्म खरिठांव लाहे,

अहे जिला उद हाँहे, कति या अकाङ मरन।

मश्रीज मुकावनी। कीर्खम। (১৮৯- বৃঃ আন্দ কলিকাতার জাতীয় মহাসমিতি উপলক্ষে।) কে আছিদ দেখদে এদে, কেমন শোভা হ'য়েছে! (আজ) দেশ বিদেশের সবাই এমে, আলো করে বর্গেছে ! (कारता) माहेरका कार्जि, कुरलत कार्जिमान ; (७८त) कोल मिखाइ हिन्त्-भूगनमान ! একটা গানে একটা তানে.--স্বাই বীণা সেধেছে ;--(আজ) ভারতবাদী, মায়ের নামে মহাযজে মেতেছে। (ওরে) নামান্ত জন নয়কো এরা, (धकनिन) धडाई छिन क्शर (मडा; (अवन) यकन वितन, नितन नितन,-- मणाहाता ह'रसह ; क्लाम (मारव, कारनंत्र वर्ग,--शार्थ मरत नरम्रहः। কোপায় গো মা মহারাণি! (আমরা) তোমা বিনে কুল দেখিনি ! "মা" বলে মা। দ্বাই যে তোর মুথের পানে চেরে আছে। "ছেলে" ব'লে কোলে নে মা। ভয়াভুরে অভয় দে মা মারের পরাণ কেমন ক'রে, চুপ করে আজ বরেছে। १३ ভারতসভার উৎসর উপলক্ষে গীত। कीर्वम--(वप्री। আছ আছ ভাই আয়রে দবে। কোটা আণ ধুলে, কোটা ভান ভুলে,

काँ भारत भगन, काँ भारत ज्यम, क्य क्याज्यि, क्य क्य त्रद्र । गिथ मूनगभान, हिन्दूत नहान,

> কোটা কোটা ভাই, এক হ'রে ঘাই, কি ভয় কি ভয় আর এ ভবে १ ৭২ অজ্ঞাত।

काश हन काश हन छाडे পড়ে' থাকা পিছে, মরে থাকা মিছে,

বেঁচে মোরে' কিবা ফল ভাই ?

चारण क्ल चारण क्ल छाहे।

প্রতি নিমেষেই যেতেছে সময় দিনকণ চেয়ে থাকা কিছু নয়

नमग्र नमग्र करत' भौजि भूषि धरत' শমর কোধা পাবি বল ভাই প

चारण क्रम् कारण क्रम् छाई।

দেব যাত্রী যায় জয় গান গায় याक পথে भनाभनि :

ध मानम भरत एक बरशह घरत

कारम करत मनामनि ?

विभूत अ शहा इकत गारह,

महारवधवान् मानव खन्छ,

नकीठ मुकानली। যারা বদে' আছে তারা বড় নয়, ছাড় ছাড় মিছে ছল ডাই; আগে চল্ আগে চল্ ভাই। চিরদিন আছি ভিথারীর মত জগতের পথ পাশে, যারা চলে' যার কুপা চল্ফে চায়, शमभूना छेट्ड ब्यारम । धुनियया छोड़ि छेठे छैठे गरव, यामदवत मार्थ यांश मिटक हरत, ভা যদি না পাব, চেয়ে দেখ ভবে वह बाह्य बनावन, जाहे, कारत छन्, कारत छन् छाई। १० तरीलनाथ ठाक्त। ্ আশার খপন।] মিল-কেপারা-একতালা। ভোরা ভনে যা জানার মধুর খপন, छान था कामात कानात क्या, कामान महामन क्षेत्र तरहाकू महाम প্রাণের তবুও যুচেছে ব্যথ।। নিবিভূ নীরব জাধারের তলে ভাবিতে ভাবিতে নয়নের জলে কি জানি কখন কি মোতন বলে चुमाद्य करणकं लेकिस रहशा।

দিতীয় অধ্যায়।

সামাজিক সঙ্গীত।

নারীজাতীর হীনাবস্থা।

(লক্ষার ভারত-বশ-- মূর ৷) वाहात-ए९ ।

ভারত-নারীর দশা দেখে আঞ্চ করে;

করে নয়নের বারি অবিরত বারে।

नाहे ब्लान, नाहे यान, भरत करत जापमान, মান্ত্ৰ ববিৱা কন্তু কেহ না ভাৰৱে।

की ज़ात जुलि आहे, व्यथना नागीन छाह,

वार्वभव भूकरवदा मना वावशास्त्र।

হার যবে নিরন্ধনে এ সব একার্ড মনে-

ভाবि, मः एम हिन्छ- एमर कानविषधर ।

इच्छा इव मर छाड़ि. जाराद स्माइन कति,

मेंनि, आरह यांश विष्ठु, देशासन करने । १४

ভাঃ নিশিকান্ত চট্টোপাথ্যার।

(कड काल भट्ट-एइ।) वाषाय-नाक्षेत्रेरित ।

মা জাগিলে দব ভারত-ললনা,

এ ভারত আর আপে না আগে না।

व्यानसम्बद्ध भिज

নদীত মুক্তাবলী। 92 [अरदाव अया मयसा] (লক্ষার ভারত-যশ--হর।) विविधे वाषाम-हेरति। कि পार्श भागाल दिवि करत यहनाती। প্রকৃতির্ঞিত ছবি জন-মনোহারি ৯ करन करन भएक अका, खुन्नान मार्था, এ পোড়া নহন আছে, দেখিতে না পারি। लिक्षदात भाषीमम. मिनामिन अहे वाम, चुद्र किद्र अक ठैंकि, यांत्र वात्र छ। स्माति। সেই যার নির্ভর, সেই বাড়ী সেই ঘর.

> ध ठाक्कर कि धड़े कत. निरानिनि कटाकन, বহিছে অজ্জ্ঞধারে, যেন নির্পরের বারি। (मादा अवकादा दाथ: अकृष्टित अन छाक.

লেখে দেখে ক্লান্ত জাখি আর ত দেখিতে নারি।

তামদী নিশার দম ঘোর আঁধার প্রদারি ঃ ৭৮ बादकानाथ जाकृती।

क्षित्रवी-कावशनि। यतिता भूरस्ति कथा समस्यता साथि छोरा ।

পুরর দৌভাগারবি, হায়, পশ্চিম-আকাশে :-त्व विम भ'रक्ट् ह'रम, पूरनट्ड द्य विमाहरह,

অভাগী ভারতনারী, ঘোর অজ্ঞান ভামদে।

काया शामी, काया बना, टेमएकशीन क्यानलना, সকলি হ'বেছে লুপ্ত, করাল কালের প্রাসে:

দে শিক্ষা দে জ্ঞান বল, কিছু নাই, হা, কেবল ছুৰ্গতির শেষ, নারীজন্ম ভারতবর্ষে।

বল হে শিক্ষিত দল, স্থশিকার এই ফল ? মাতৃকুলে এ ছুগতি দছ কর অনায়াদে !

धम ভाই कर मान, धरे (नर, धरे थान, (६ मण्णिक कारक, तक लाख मान कराय ह তবে আর্ঘ্য-অপ্নার, না রবে এ দশা আর ;

ভরিবে বিপুল ধরা, পুন: তালাদের যশে। ৭৯

देखदरी-काउदानि ।

চেয়ে দেখ দীনবন্ধ ভারত-বমণী-পানে। क रहरथ छात्रव हमा मीममाथ छोमा विस्त ।

ছারকানাথ গান্ধুলী।

অজ্ঞান-জাধারে তারা, হ'য়ে আছে পথহারা, হইয়ে গো শাভিহারা অমিছে-ভব কাননে।

কোমল কুন্তুমগম, व्यार्वत जिनी मम.

अवद्याध-कावा माटक, वियादन काटडे कीरन ; তাদেরে সতত দলে,

ममाब इत्रग्राल, बाब ए बाब ए कान प्रविमी तमने शर्व ।

विश्वा-स्त्रमायात, করিতেছে জনিবার.

ভাষা হৈ ভারত ছবি, দেখিরে বাঁচি কেমনে;

लामा विस्त तक तमा तम, मुहादेश कारियम,

छेकातिरव व्योगीरत, कुछा देव जानिक खारन । ৮०

```
मनीज मुकावनी।
98
              ( शरद थांक (इ नांध-इद।)
                  বিবিট—আড়া।
        ভারতমারীর দশা ভাবিতে প্রাণ বিদরে;
        দেখে বিবাদ-মুরতি ত্রয়নে অঞ্চ ববে।
    রপে ওণে অভুলনা, যত ভারত ললনা,
        দলিত কুম্বসম অনানরে অভ্যাচারে।
    त्य त्रत्य मानीबी कमा, मीठा एमप्रकी, थवा,
        জন্মেছিল সেই দেশে ডেকেছে কি অন্ধকারে ?
    ভারতযুবকগণ,
                              कत कत एतम्म,
        জননী ভগিনীগণ, ভানিছে তুংগ্দাগরে।
   গৃহনত্মীরপা বারা, মৃত প্রায় আছে ভারা,
       ভাই এত পাপ ভাপ, ভারতের ঘরে ঘরে।
   व्यवनात रङ्ग दिना,
                         ভারতের এ বাতনা,
        বুচিবে না বুচিবে না শত বুল বুলান্তরে। ৮১
                                  कानमहस्य भिका।
               ( कड निम महिदय-इन । )
                  वाश्राय-मान्।।
        ट्रांस दम्ब दम्ब छट्ट चावळ-मञ्जासभन ;
```

জননী জন্মভূমি চির বিধাদে মগন।

অনাদরে অত্যাচারে, নীরবে করে রোদন। অজ্ঞানত। অধীনতা, পাপ তাপ দবিদ্রতা; শত শত চিতানলে ভারতে করে দাহন।

अवर्षा करत सम्म ;

हाबाहेश वद्यानम्,

```
সামাজিক স্গাত।
  না জানি কি মহাপাপে, পুড়িতেছে মনস্তাপে;
      কণকপুতলিগম, ভারত-রমণীগণ
  निक्किलेश (च त्रमती, शृंदनश्रीतिषा विभि:
   (দেই) অসহায়া অভাগিনী, হেরিছে বির্দ্ধে প্রাণ।
কিন্ত হায় যত দিন, অবলা রহিবে হীন;
    রবে চির জন্তগত, ভারত-প্রথ-তপন। ৮২
                             व्यानसम्बद्ध मिछ।
           কত কাল পরে-জুর ()
          विविध गांचाय-महामेहरवि ।
     কত দিন বল ভারত-রমণী।
      कैंक्टिंग कांग्रेट्ट कियम शामिनी ।
অজ্ঞান-আঁধারে, অনুল সাগরে।
      पुरित अगनात औरन करनी।
তারাও রমণী, রাণীও রমণী।
     (তবৈ) কঞ্লা কেন না করিবেন তিন এ
यार्वे प्राप्तकरतः वारीत ह्यारतः
      युठा छ "रनद छ स्थव तक नी। ४०
          नित्रमादी अधियम । १
         (यस वस वस/भावि-नेप्य ।)
```

- বিবিচ--এমতালার

खनरा जनरा जानकनश्ती नाडिशा नाडिशा उटिन।

আজি ওভদিনে মরি কি স্লান্দ ইইল।

কিবা প্ৰথে আজি পোহাইল নিশি,

हानिन श्रकृष्टि नावरगत तानि :

উঠিল তপন মৃত্ হাসি হাসি, উল্লাদে প্ৰন বহিল। ভারতজননী চির বিফাদিনী, পুত্র কল্পা ল'রে বসিলা আপনি;

वह मिन शांत एमध त्व एमध त्व बाहा किया त्यां छा हहेंग। ঐ দেখ চেয়ে গত কথ। স্মরি, বহিছে নয়নে বিযাদের বারি ;

ঐ দেখ আশা, ঐ দেখ ঐতি বদনেতে পুনঃ ভাতিল।

रंग कामन बाब रमिनाम गरत, कृतिर कि खान मक्रिम ब्राट, छ जित्र बाब मृठ প्राप्त छाई बीरम-म्याद हरेन।

স্বদেশের হিত করিতে সাধন, এন তবে ভাই করি প্রাণপণ, ব্দর বিভূ কর গাও রে দকলে, ভারতের হুঃখ ঘুচিল।

আন্দচল মিজ

মাহানা-- কাণভাল। এত দিনে বুকি, বোন্ ছঃখনিশা অব্যান,

উদয় মোদের ভাগা, উদিত স্থগ ভপন।

कराय कानित्न कन्न, छान कि शेरम धन ; বুগ যুগান্তর আছি, হ'রে অজ্ঞানে মগন।

হ'রে স্বার্থপরবর্ষ, কারার বন্দিনীপ্রায়, অজ্ঞান-তিনিরে যারা রেখেছিল গো স্বায়

के स्वय छात्रा गरत, गांकिस करनेए करत.

गावाबेटल जागावित्य, नित्व कान-जाकत्व।

নমুখে দেখ না চেয়ে, উপহার-ভালা ল'য়ে, ভেটিতে আনিছে তারা, চল লই গে বরিয়েঃ [रानातिराइ ७ देवरता ।] याहात-वद ।

छुविन सोगात स्तम भारभत माधरत, পরিপূর্ণ দশ দিক ছোর হাহাকারে।

মহাপাণ শিশু বিয়ে, এ দেশে প্রবেশ পেতে, ছারখার করিল বে, স্বর্ণ-ভারতেরে ঃ ধন মান বুলি বল প্ৰ গেল ব্যাতল ;

জাগ রে ভারতবাসী, উদ্ধার মায়েরে ৷ ৮৬ ডাঃ নিশিকান্ত চট্টোপাধ্যায়।

লগিত খাখাল-একভানা I

বঙ্গে একি দেখি গভাচার, ওণ-জ্ঞান-যুত বঙ্গেরি সভান, আম-অভিবানে করে অভিযাম, কিন্ত একি জ্ঞান না পাই দছান,

অজ্ঞানের মত যত ব্যবহার।

গুমপোষ্য-মানক বালিকারি সনে, আবদ্ধ করিছে বিভাই বন্ধনে, वारतक जाविरा माहि त्मरण महम,

কি বিষম কল কলিবে ভাছার।

খার্থণর হছে জনক জননী, সভাদের ভভাতত নাহি গণি, ्यामा शतिगास कतिए यसन,---धरि तम्याहात ।

শল্প কি ভাহার। নিজমন্দ জ্ঞানে, বাবেক কেরিছে না কেখে নয়নে

ज्यानि युवजी र'रत, (भए अन मारे छ दवना।

পিতা মাতা নিগর হ'লে পাবের হাতে স্থাপ বিয়ে;
ছিঁছে নিবে কোমল কলি, কউকে গাঁথিল মালা।
না বুকিলেম ভালবাসা, নাহি স্থধ নাহি আশা;
কারে ক'ব এ চর্কশা, কে বুকিবে মর্ম্মজালা।
প্রিক বলে দেশাচারে, গেল ভারত চাংগ্রথারে:

অনিচ্ছাতে শৈশবেতে খেলেছি এক ছাথের খেলা।

পাণিট ভারতবানী, পাষাণ হ'বে না দেখিলা। ৬৮

কেবল যাত পড়ে মনে,

वामन्छल मिता।

বিবাহ কি ভাও জানিনে.

নিলয় বিধাতা কেন রে আমারে, পাঠ।'লে ভারতে রমণী করেরে। कि मारव दनदत, कि छावि अखदत, ভাসা'লে আমারে ছংখ পারাবারে। ভারত-পুরুষ, অন্ধ-সুথ-বশ,

জবলা স্থাতে কাতর মহেরে।

देवसवा यञ्जणा जांदा ज कारन मा, পত্নীর বিয়োগে অভেতে মঞ্জেরে। হে বিদ্যাসাগর, কেশব কি কর,

ইং শগ্রসর, এ ছংখ নাশরে। ৮৯ সজাত।

্বিলাবাগর বধন এখন বিধবা বিবাহের আন্দোলন করেন, সেই সময় বঞ্গদেশের সর্বাত বিম্বালিখিত সম্বীতটি পীত হইত।] বিষিট থাখাল—কাড়া বেন্দ্র। ।

> तिरह शाक विमानाभव **हिबक्की**वी घरम मनदत करत्रहा विरुपाण, विधवास्त्र इस्व विद्य ।

करव हरव असन निन, व्यठांत हरव अ आहेन, रमरण रमरण रक्षणात्र रक्षणात्र रवरतारत एक्स.

विश्व। त्रभवेत विद्यात त्यदंश यादव शुम, मध्यादमत मदक याद, दत्रवेखांका माथाय गद्य । ब्यात कम ভावित त्या गई, देशन विशाहन नहे.

बनात नृषि संबद्धांत पढि व्याख हरे,

দঙ্গীত মূকাবলী। त्रांधाकाख यानाजाख निरमन नारका महे. লোকমুখে তনে আমরা আছি লোকলাজ উরে। একাদনী উপদেব জালা, কর্ণেতে লাগিত তালা. चूटर यादा दम मन बाना, खुड़ादन कीनम, ছজনাতে পালৱেতে, করিব শয়ন---विमानिया वांषरना र्थाणा अधिकारि माथाय मिरत । যে দিন হতে, মহা প্রসাদ, ওমেছি ভাই এ সম্বাদ, শে দিন হতে সামক্ষেতে হয় না বেতে বুম-পছক করেছি বর, না হতে ছকুম। ঠাকুরপোরে করিব বিয়ে, ঠাকুববিরে বলে কয়ে [उपरवाक गाम्बर जनवक्य ।] (3-221) প্ৰথে পাকুক বিদ্যাদাগৰ ভিৰন্ধীৰী হয়ে। সদরে করেছে ভিলোট, বিধবাদের হবে বিয়ে । ।।। কবে হবে ভটদিন প্রকাশিবে এ আইন, জেপে দেশে জেলায় জেলায় নেকবে ছকুম, विषया त्रमीत विरात, त्याल यात्व धूम, মনের হুখে থাকবে। মোরা মনোমত পতি লয়ে।

> জমন দিন কৰে ধৰে, বৈধবা যন্ত্ৰণা যাবে, জাতবৰ পৰিব ধৰে, লোকে দেখৰে তাই,— আলো চাল কাঁচকল। মালবার মুখে দিছে ছাই;— আলো ধৰে, বাৰ ধৰে, বরণভালা মাথায় লয়ে ঃ ৯১

মধুকানের হর-তেতালা।

भरगत प्रथ वन्त कारत।

व्यमाथ विश्वा वर्ता, तक हाहित्व महा करत ।

বহিতে পারিনে আর, হঃসহ জীবন-ভার,

এ বিষম অত্যাচার, কেন অবলার উপরে

विवारित छप्र कान्य, नव तनथि भृत्यमय,

কাঁদিব আর কত হার, শোকেতে প্রাণ বিদরে।

কে আছ লহ এক বার, ছুঃথিনীর স্মাচার, বিপদে কর উদ্ধার, যাঁচাও হে প্রাণে। ১২

ত্রৈলোক্যনাথ দাল্লাল।

(মধুকানের হর ।)

यहाय-कांब्रहांगी।

হার। বাল্যবিধবা ছঃখিনী: হ'ছে চির পরাধিনী,

কাঁদে শোকে দিবদ যামিনী।

मनिन मून कमल, वितिष्ट् महन छल,

রোদনমাত্র দক্ষণ, বাণবিদ্ধ খেন কুরঞ্জির।

নাহি মুথ পান ভোজনে, বিচিত্র বসন ভূমণে,

भएए मना धवानरम, त्यम स्थल हाका त्योगमिनी। याजनात्र मशीव मीर्,

काशिया ह'त्वरक् वर्ग,

বিষাদে দলা বিষয়, খেন মাতল-দলিত নলিনী ৷

धका वितिद्य वित्राल, जानिएक सम्बद्धान,

কেই নাই ভূমওলে, ভনিতে ভার ছাবের কাহিনী

```
मभीज मुख्नात्ती।
54
  ওহে বন্ধবাদী দবে, কত আর নিস্তা বা বৈ,
      অবলার শোকে বিলাপে, পূর্ব হল গগন মেদিনী। ৯০
                          তৈলোকানাথ দাগ্যাল।
                | आर्था-विश्वा ।
                  আসাবরী---আঞা।
      (कैंन मा दि जमाथिमि (केंन मा (केंन मा जात !
      পারি না হেরিতে অঞ্চ আর নয়নে তোমার।
                         नीतरत मरनत एए।,
    সহ অবনতমূথে,
        দারুণ অনলদাহ অদয়েতে অনিবার।
      ভাতিত স্বর্গীয় শোভা যে চারু আননে,
      ভাসিত ত্রিবিদ-জ্যোতিঃ যে যুগল লোচনে;
    বিষয় সে মুখ ছেবি, সে নয়নে অঞ্চবারি,
      নির্মি উপলি মম যার শোক-পারাবার।
      দাজিতে নবীন বেশে ভ্যিত রতনে,
      বাঁধিতে চিকুরদামে আনন্দে গতনে;
    আজি মলিন বে বাস, আলুলিত কেশপাশ,
      পারে না হেরিতে মাতঃ হায় হায় নয়নে আমার।
      किंत मा दर जमाधिनि किंत ना किंत मा आते। ha
                               ं विद्यालाण यात्र ।
                  বাগেদী --জাড়া 1
      (क कानिह?)
      কে কাদিছ একাকিনী বদি এ নিৰ্জন স্থানে;
      কেন বা গাইছ মুদ্র এত সকরুণ গানে
```

এত যে কয়ণ তান, কি ব্যথা পেরেছে প্রাণ, প্রতি উচ্চ তানে মম কারুণ্য ঢালিছে কাণে।

নিশীতে করিলে অঞ্চ বিযাদে কমল,

মুছান অরুণ আসি তার নেত্র-জল,

द्रशाहे कि छूमि ছूर्य, कांनित मकन मूर्य, মুছা'বে না কি ও অঞা তপন কিরণ-দানে।

হেবিয়া ত্থিনী আজ এ দশা ভোমার,

বিদীর্ণ দারুণ শোরে জনম আমার, বল কোন জন্ম ফলে, আদিলে এ পাপ-ছলে,

বর্থা পূজা দেশাচার বধিয়ে রমনী-প্রাণে। ১৫ विकासनान दाय ।

(কৌলীন্স, বহুবিবাহ ও কন্তাপণ !)

[অহুড়া কুলীন কস্তাগণের উক্তি!]

(शीव माळ मगद - इद ।) মনত্বে ক'ব কায়,

ছাথ কে বুকিবে এই ছাথময় ধরায় 1

পিতা কপাল দোবে.

কাপালিক প্রার, লিপ্ত আছেন কুললগ্রীর সেবার,

व्यावना शानिका के गर कृतियाती.

वनि भिरंत कुनामशित भाग ।

भागाता भवना युवछी, कि इहेर्स शक्ति, प

না দেখি অল্ব এ ভুবনে, কঠিন পিতা মাত' তায়,

চিত্ত

সঙ্গীত মৃক্তাবলী।

স্বেছ মমতার জনাঞ্জনি দিলে হ'জনে,
(কেবল) আত্-জারাগণের দাশুর্ভি করে,
পোড়া উদর পোষি আজীবন ভরে,
আছি আতার যন চেয়ে, আতা পাছে কোন ফাঁট পার।
সদা মরি মনস্তাপে,
না জানি কি পাপে পাপিনী জেনেছে বিধাতার (তাতে)
পাপ ভেবে চিতে, পাপীনীদের হাতে,
দেবে হিজে নাহি জন্ন খায়।
(হাছ) মোদের যে যম পতি, স্বার করে গতি,
চক্ষু থেয়ে নাহি দেবে এ যুবতী,
বুকি মরা দেবীবরে থেকে যম্মরার। ১৬
রাসবিহারী মুখোপাধ্যায়।

[শিশু বরের প্রতি বুদ্ধার উক্তি।] (কুণাকান্ত পাঠকের—হর।)

আর আমার কাজ কি বিয়ের সাজ পরিয়ে বুধকালে। শিশু-বরের পাশে কোন্বা রসে,

ঘোষটা দিব পাক্না চুলে । গায়ে দিয়ে নামাবলী, গাই শিব-মামাবলি,

নিবেছি মালার থলি হত্তে কুলে,

ভাল ফলো ফল বন্নালিতে মিল বর এক কচমা ছেলে ৭ হায় লাঠি ভর করিছে, এ শিশু-বরকে মিয়ে,

কেমনে খুবৰ আমি কলাতলে,

(-কুকাৰান্ত পাঠকের—হুর ৷)

যাই লো সই, ঐ অস্থরে বুড় হেরে ভরে মরে।

দিলে কাশটা, ত্য আকাশটা কাটে, কাঁপে লাঠির বাঁশটা ধরে।

সাজা'রে পাটকাপড়ে, আট্কারে মুকুট শিরে,
বলে মান দেখিস বরে নরন ভরে,

দেখি পাটে বে মাথাট। চেকে, পাটে বদেছে ঠাই করে। মোটকা সব ঘটকা এসে, জনালে চোটকা ভাষে,

বুড়টা ঠোঁট কাপাহে হাত করে, কামি অভবৈতে ভরি লো তার মন্ত্র কৈতে দল্প লড়ে।

(হে দ্যান্য তব তুলনা কি মিলে—হল।)

(पर नशानश चन कुमना (क किस्से—हरू।)

कुल-स्मरा दक्त काम द्या विवृत्त ।

मिनिज-विश्वा

कि दलारम हरप्रदाह दलायी कि कृद्धि कविदेश ।

गमील मुकावनी।

कृमि नत्ना वानारतः; वन दकान् इताहादत ;

ब कर्छात्र को ताजारत ; अविघारत मिरन । -त्मा वरह वातिविन्त्, यनिन वनन-हेन्त्,

नाहे कान निम्ब-विम् ; खमब क्लाल। কেন যেন কান্ধালিনী, থাক দিবৰ যামিনী,

কেউ ভোষার কি নাই হৃঃধিনী এ মহিমঙলে।

ভ্রাভ্রধুর পদ সেবে, मिन कांगें छ नागी जादन, নিশার কাতর ভেবে ভেবে, কোন পাপফলে।

জনাথা কুলিনের মেরে, কি থেদ তব স্বদয়ে, (एथ (कम तरह द्रार्थ, मध्या मकरण । >>

बानविहाती मूर्याणामात्र

(দেখলাথ বত নারী বলে নীরে —ছর।)

वलानी कुहे यादा दान्नाना (इएए। कृत्न ভाরত कनाहाद्य,

লোগার বাজালা যায় রে ছারেগারে।

ত্রণহত্যা দক্ষে ক'রে, ব্যভিচার ভূই যা রে মরে,

পাপজ্যোতে ভাসালি রে বঞ্চ-মায়েরে অপার পাধারে।

कंगनिमी ममारब नव कृतिरमत स्पत्त, जनाथिनीद (नर्म थारक मनिमा रहा,

(এরে) গুলের দশা মনে হলে, ভঃথেতে পাধাণ গলে,

কেউ নাই ওলের ধরাতলে, দদা মনানলে জলে মরে।

লোত্রির বংশল বংশ গেল রে নিপাত,

(এরে) कुमाबी कुनीम-कुमाबी कরে अञ्चलाङ,

(দেখলাম যত নারী বলে নীবে--ছর) । মেল ভাঙ্গ মেল ভাঙ্গ কুলীন সবে। ভবে দে মঞ্চল হবে, সমাজেতে ববে হে গৌরবে। स्माल स्माल माहि मिल, अस्य किरत कल तल,

মিল মেলে মেলে মিল, ছাতি কুল দকল রহিবে। घरत घरत कुलस्मरत कुरंथ टल्टरन कांग्र.

(এরে) কেমনে দেখ নহনে পাহাথের প্রায়,

(अरत) रम नम थए म कृरम, कि शोतरन बाह्य कृरम, দেশ নালিশে সমূলে, আর কত কাল রবে এ গৌরবে !

সমতনে অৱদানে কুল-কভাগণ, (এারে) মুক স্থকপাথীৰম কবেছ পোৰণ (এবে)

তাতে কেন হ'য়ে ব্যাধ, দে পাথী জীয়তে বধ,

ওদের কিবা অপরাধ, কেন এন্ড বাদ দাধ তবে। ১০১

রাম্বিহারী মুখোপাধার।

[মরণোদ্ধ পিতার প্রতি অনুচা কভার উক্তি :]

(পারব না রাজ সভাছ বেতে-ছর ।)

कांत्र शास्त्र वा हारव शिक्त क चुः विसी कूमरमरव, कि वस पिरव यां छ एक कृति,

রেখে যাও কে কার করে আছাতে।

ভাতা নহে ভাতার মত, সে যে যায়ার অনুগত,

(ब्यात) नामी शरत दन कठ, जाठ्-वर्त मूथरहरत। অনাথিনী তন্যারে, আজীবন পালন করে.

শেষে পিত কার করে যাও হে তা'রে সমর্পিয়ে।

কেন পুষেছিলে মোরে, চিব্ৰ দুঃখ ভোগের তবে,

(এখন) ভূমি চল্লে ভোমার ঘরে, জ্থিনীরে ভাগাইয়ে। ১৩% वानतिशाती भूरशाभाषात्र ।

[कान वहविवाहकाडी औरक माल मध्यित ।]

(ছাত্রে বিধি ভোৱে যদি বিরলেতে পাই বে - एव ।)

वह बिन लाद अमिहि, हिनि मा का चंखतराड़ी, कान भाष शहर मा था, विश्वनाथ वावतीत वाणी।

या'ता हिन ছেলে शिल, छा'त्नत र'म ছেলে शिल,

विता करतहे शिलुम कारल, रख शिल नहत कृष्टि।

বাড়ী ঘর তা নাহি চিনি, (কেবল) খতবেরই নামটী জানি, উত্তরেতে বাগানখানি, খুপারি বব বারি দারি।

दाकीत मत्या अरु अकडाना, जाति मत्या क्रांकि हुना,

কক্ষে নিয়ে ভিক্ষার কোবা, বেড়িয়ে বেড়াই বাড়ী বাড়ী।

বিজ রাণবিহারী বলে, আর ত হালি রাবতে নারি,

कृषि या किया विश्वत, त्य वर्षे क्वांयाति नावि । > ° बानदिशती मुर्थाभाषात ।

[কুলীন কুমারীগণের বিবাহ দর্শনার্থী প্রতিবেশিনী-গণের উক্তি।

(গুরু-চিন্তা কর মন রে দিন ত বরে ঘার-স্থা।) আয় লো আমরা কুলীন-বাড়ীর বিয়ে দবাই দেপতে যাই,

তোরা অমন বিয়ে দেখিদ নাই। ভনেছিৰ দানসাগর বিয়ে, ওদের বিয়ের ঘটে তাই,

रेनल निमान भक्त बुरवादमर्ग, अकी वदम हाविने शाहे.

(দিবে) এক বরেই চারিটি মেয়ে লোকের মুখে ভনতে পাই.

(আহা) ওদের কেমন কঠিন হিয়া,পিতা মাতার দয়া নাই । ১০৪ दागविशाती मूर्याभाष्यात ।

> [क्नीन कष्टात ऐकि।] বাশ্বাজ---আড়াটেক। ।

কুলীন তন্ত্ৰা হবে অত্লে ভাসিত্ৰা যাই, অবলা ভূবিয়া মরি, কোন কুল নাহি পাই।

হইয়া কুলীন বালা, সহে না সহে না জালা,

भवन कहेटल दाँडि, ब्याय किছ माकि ठाँहे। वस्माती एवा गांत, तमनी वहें तन छात.

रम नात राशकात खीवन यज्ञण ठाँहै।

कानीकृष ठकवणी।

[खुडा शाम ।]

(शहर गीमगांध-छत्।)

যালিক বিভাগ-অকতালা।

दिलामादत दश करा. করেন গ্রহণ, তাহার কথন ভাল মাহি হয়।

দঙ্গীত মুক্তাবলী। जूमि नर्सनानी, वन्न जूरम जानि, নাশ রাশি রাশি মানবনিচয়। যে দিকে যেথানে হেরি বঙ্গভূমে, সে দিকে পূর্ণিত ভোমারই ধুমে; धदि माया-दनम, नाम वक्रप्रमा, ভোমারই ভরে হাহাকারময়। যক্ত প্লীহাৰি খাগ-কাশ মত, শাংঘাতিক বোগ আছে নামা মত; শেই সমূৰ্য, ভোমা হ'তে হয়, আহা কত তায়, মরে জীবচয়! ও বে স্থা তোর হেরে অভাচার, বলে বঞ্নাতা কাঁদে অনিবার: নীয়ৰে নিৰ্জনে, ব্যাকুলিত মনে, त्म एथ दर्शतिल विनद्ध खन्छ। ১×৬ [ভাছ ধীননাথ—ছার।] থাখাজ—একভালা । বলি গো ভোমায়, धति इंगे भाग, কান্ত হও পিতা ত্যন্ত প্রাপান। দেখ গো এক বার, ভুবিল সংসার, बागालव व्यक्ति शंख कुशावान्। জীবিত মাকিতে ভূমি গো ধরায়, त्रश्यि कि मात्रा क'ता नितासक. विवद्यां शीमशीन निक्रभाव, थनाथ रशिक-शासक-मगाम ।

কাঁদেন দিবানিশি করি হাহাকার, শোকে ভগ্ন-দেহ অন্থিচর্মদার,

दमिशाल दम छाथ निमद्त भाषान । ১०१ - देवहनाकामाथ मानान।

খাখাল-টিমে তেতালা।

মনোছ: থে জনম বিদরে : (হাম হার রে) ছইল দংসার ছারথার স্থরাপান করে।

জনক জননী মোর, ইইরে শোকে কাতর, ত্যজিলেন কলেবর অন্ন বিনা অনাহারে।

ণতিব্রতা প্রাণপ্রিয়ে, অশেষ ক্লেশ দহিয়ে,

শ্বনাথিনী প্রায় এবে ভিক্ষা করে ছারে ছারে।

जगम-इःशी नडाम, কুধার মৃতদ্মান,

তার আর্ত্রনাদ আর ভনিতে না পারি রে।

সঞ্চিত ধন-সম্বল, যাছিল সকল গেল,

ছকর্ষের প্রতিফল হাতে হাতে পেলাম রে। ১০৮ ত্রৈলোক্যমাথ সাহ্যাল।

(यन চল निक निक्कार- एव ।)

ত্রট মলার-একতালা।

e ভाই ग'लामा खुवाशारम ।

वनि विनय करत, वृष्टि भारत करत.

वाच अञ्चलाय चाक गावशास्त ।

কত ভণ্বান প্রিয়দর্শন,

ভারত-মাতার অবয়ভূমণ,

```
দঙ্গীত মুক্তবিলী।
25
      रशोवन वहरम, मरझ ख्वाबरम,
           ककाल मतिन खार्थ।
           ভাসা'রে সকলে ছঃখের পাথারে,
           চির শোকানল জালিরে অন্তরে,
           পিতা মাতার কোল গেল শৃত্ত করে,
           বিষম শেল বুকে হেনে:
          দেখ দেখ কত যুবা বলবান,
           মদে মত হ'রে হারাইল জান,
           সাংঘাতিক রোগে সদা মির্মাণ,
          না পার সূথ জীবনে। ১০৯
                         তৈলোক্যনাথ দাল্লাল।
               মচার—আড়াঠেকা।
      खुतामनम मः शास्त्र माख मदव दक्षान ।
      কর চুর্ণ মলপাত্র, পাপ-গুরিকাভবন।
    প্রচণ্ড অসুরদ্ধ, "
                        প্রচারি ছরা-গরল,
      মহা পাপে ভুবাইল, ধর্মনীতি জান ধন।
    কাদি'ছে বিধবা কভ.
                       इटेए मर्कव इड.
      ভনিলে বিদরে প্রাণ করে ছনয়ন ;
   वाक्तित कृष्ट्रीएक, खावन कनक-ध्यादक,
      করিতেছে সর্বানাশ, ছোর অনিষ্ঠ সাধন। ১১০
                           देवत्वाकामाथ नामाण।
               ভারত-মাতার উক্তি।
                 লগিত-ভিত্ত ।
   বাছা বলি রে অকালে জীবন বিও না।
          (মারের কথা রাধ রে:)
```

আভ স্থাপে মত হ'য়ে, নিজ নিজ হাতে ভূলে, স্থা-পাৰল খেও না ॥

অভাগিনীর পুর যত, স্থরাপানে হ'য়ে রত,

জামার মরমে দিল কত বেদনা। সে কথা আবণ করি, সদা বছে চক্ষে বারি,

থেকৰা অব্য কার, শুনা বহু চন্দে বাছর, আমারে জার কাঁদা'ও না ॥ ১১১ হরিনাথ মজুমদার।

হার রে তোদের হাতে ধবে করি রে মানা।
তোমরা কেউ স্থধা বলে, হাতে ভূবে,

(खता-शतन) शांस करता मां, रत ।

১। মদ্য হয় কাল ভূজত, ওরে' যে করে তাহারি দক, হয় রে ভার ধন দাত্ত, জীবনো রহে না ;

এই যে গরল পানে, মলো প্রাণে, (সোণার হরিশ), আর ভো উঠে বসিল না (রে-)।

২। প্রশ্বর গুপ্ত বঙ্গশনী, তারে থেলে ঐ রাক্ষসী, এর মত সর্পনানী, এমন আরু দেখি না;

থেলে কত রতন, বতনের ধন, তবু উদর পুরিল না ঃ (রে)

। মাইকেল প্রীমধ্কদন, ওবেছিল বছের অম্ল্য ধন,
 করিলে লাখন এখন,
 কে ধন আর মেলে না;

त्र दर शतन दर्श त्वा, इतन भी त्या मा ;

मा त्रान कात क्रांकिश मा, ८३ । (शास्त्र मधूक्तम)

৪। স্থামার বে কপাল পোড়া,বেটে কাটনার স্থত কলার ছড়া,

হ শিখালাম শেখাপড়া, পেরে রে বাহুমা :

मनीज मुकावली। 28 अयम यह मरन, वंश व्यास्मारन, (कॅरन मित्र) মারের কথা কেউ শোন না, রে। (মদে মন্ত সদা) ৫। কাঙ্গাল কর মনের বাধা, কাঁদে বন্ধমাতা,রাথ ভাঁর কথা ওরে ভাই, আপনার যাধা আপনি থেও না ওরে, কাঁদিতে তাঁর জনম গেল, মাকে আর ভাই কাঁদা'ও মা রে (তোলের পায় ধরি)। ১১২ হরিনাথ মজুমলার। (कि चांत वामान माध-- एवं ।) भाराङ-चाडाठेका । কেমনে ভারতে পাপ সুরা ল্রোভ প্রবেশিন, শনল-প্লাবনে দেশ একেবারে ভাষাইল। এ বহি গরলময়, खबु ध जनत नह, অনম্ভ প্রবাহনলৈ ভারতেরে বিনাশিল ! হার রে মোনার বঙ্গে, এ পাপ-ছবা-ভরজে, चकात कतिन यव या किछ मन्नान छिन। দেশের ভরদা যারা, হায় এ অনলে তারা, এখা বিভব সহ জীবন আছভি দিল। পুত্র শোকে অবিরত, কাঁথে জ্বাড়মি কত, অবিবল অঞ্চলে এ অনল না নিবিল ৷ ১১০ **ला**निव्यक्षम मान (বাবে কিছে দিন আমান্ত-ইন্ত (म् भूगताय-व्यापार्टका । (विस्ता !) कड द्वार्थ हित्य बात्र यस, कांबाहेग्रः बाकाधन, हावाहेग्रा निःहामन, वीडिशा हिलाम (मर्प गांदनत मुश्कमल !

স্থরার প্রবল স্থাতে, যায় তারা অধঃপাতে, কালা'য়ে অভাগী মায়--হায় কি পাপের ফল। দেখ বন্ধে অবিরত, সন্তান-ঋশান কত,

> জলিতেছে মহা ঘোরে পোড়াইয়া মর্মস্থল। ১১৪ (शाविसाठक गांग।

> > স্থিরার উক্তি। मामो है। वि ।

मिल यनि तक्षवामी आमात आखा. 'অগন্তা গণ্ড ব' কর পিলৈ সমূদর।

बार्य बार्य (थानाकांहे, जारह दन शतिशाहे, भौतन-मूखित्व अथ वङ्गृत नत्र ।

থাও ব্রাণ্ডী এক প্লাদ, কাটিবে ভবের ফাঁদ,

আপনি সজিদানক হইবে চিমার। **जूरत** यां क बाज्यभव, दिव हिंदना भवन्भव,

কর হে যোগীর মত উদার ছালয়।

কুকুরের গলা ধরি, থাক ভূ-শহ্যায় পড়ি, কর দোহে ভাতভাবে নব পরিচয়,

নিলে যদি বঙ্গবাসী আমার আলয়।

[স্রাপামীগণ।]

वर बांधी काम्भीन, कृषि इरेकि कृषि बिन्.

নাহি জানি তব পরিচয়। क्रादिक स्मरणता त्मति, क्रिम तम् धारकचती,

द्यामा कांति कृषि वक्षमद ।

```
পামর পায়ও যারা, তব নিন্দা করে তারা—
কে বলিবে কত পুণ্যে হয়।
তোমার পিপার গাছ, তোমার বোতলে কাচ,
জর স্থরেশ্বরী জর জয়।
২
[স্থরা।]
থাও হে আবেক মান—কিনের সংসার ?
বুজিলে চক্ষের পাতা কেবা থাকে কার
করিলে চপেটাঘাত, করিও না অঞ্চপাত,
কিরাইয়া লিও জন্ত কপোল তোমার।
প্রধানি নুথের গ্রাস্ক্র পর-উপকার।
```

বৈরাগ্যের পরাকাঠ।—প্রশংসা তোমার। গাও হে আরেক ব্লাস—কিসের মংসার।

[ऋता।]

কাঁবিবে জননী যবি কাঁবিবে কাঁছক.
ভগিনী তোমর ভরে, যবি জজপাত করে,
সোবর ছবিকা ঘাতে যবি চিবে বৃক্,
কতি লাভ কিবা তায়, ছবিনে ভ্লিবে হায়,
গ্রমন সংসারে বল আছে কিবা ল্ব্য প্
সমুধে রাগ্ডীর প্লাস—দেও না চুমুক।

পরেরে দিয়েছ ছাড়ি,

আপনার ঘর বাড়ী,

[ख्रतादियीशन।]

কি বলিলে রাক্ষদী রে ?—ভনিলে কি ভাই ? খাইয়া বুকুের রক্ত আশা মিটে নাই ?

জায় দেখি এক সাথে, দুর করি পদাঘাতে,

মাঘের বুকের শেল দেশের বালাই ! ভালিয়া বোতল গ্লাম, যাহা কিছু দর্শনাশ,

ভারত-সাগরে দিব ভাসাইয়া ভাই।

আয় রে এথনি পিয়ে, এখনি আগুণ দিয়ে,

পোড়াইয়া থোলা ভাঁটা করি ছাই ছাই।

মারের বুকের শেল দেশের বালাই। ১১৫ গোবিস্ফল্ল দাস।

জংগা—একতালা)

(थंवना (थंवना, क्रूं वना क्रूं वना, यह वह किनिन छोड़े दि।

অদের অপেয় হের বস্ত অতি,

মতিয়ান নরে করে হীন্মতি,

जब निय्न घटे जस्मय पूर्वित, मर्समारमद ठाँहे रह। विमारम भन, घठांव विभन,

করে ছ্রাগয়, করে চতুস্পান,

मनदकत मन, भाउदकत हेन, मन आनदनत वीहे दत।

বর্জনেশে পুরা চাপে যার ছাড়ে,

কলেবন ভাগে করে কভাগারে,

চিনি বিফাইন হয় তার হাড়ে, অলক্ষীর বাড়ে ঠাই রে।

দলীত মুক্তাবলী। 20 অভজ্য-ভক্ষণ, অগম্যা-গ্ৰমন, অহরহ অপকর্ণে আকিঞ্ব, অধর্ম মহলানে করার বিচরণ, বাছে না বলদ গাইরে। যারে দংশায় স্থরা-কাল-সাপ, कनक-मागदा माहे मध् वीत्र, নানা রোগ ভোগে, পায় পরিতাপ, অত্মন্ত সদাই রে। নেশার চুলু চুলু নেত্র জবাফুল, বিষয়ে বিরক্ত কাজ কর্ম ভূল, ছিত উপদেশ যেন বাজে শ্বা, রেগে হতে হয় কাঁই রে। কথাতে বেতাল, মুথে ভাঙ্গে লাল, চলে यात्र (वैंक, लांक यान मांजान, পথে ঘাটে প'ড়ে থায় কডগাল, किछि। असम शांकि दम्या मारे दर्व। ১১७ প্যারিমোহন কবিরছা থাইলের হয়—বেষ্টা। कानिएइ माधक-सामय, नाशिव नव, ভারতভূমে দেখু রে ভোরা। र्ध तथ इराइन कष्ठि, तथानाकाणि, গরিব লোকদের কল্পে পারা ট रमनी यम गन्छ। (পরে, অমেক থেরে, ধনে প্রাপে ম'লো ভারা। ছাভিয়ে সকল কর্ম, গৃহধর্ম, यदा दकवल खुवा खुवा।

সঙ্গীত মুক্তাবলী। निकिछ। वृक्तिताल, दश्त रहतन, লোককে করে চিন্তা-জর।। তামাক চুকট নস্তেতে হয় উদ্বাময়, मिसना जात माना पाता; व्यानित्र एका कालि, व्यानधी नालि, করে ছকুম হাসিল ভারা। হার! পেরে অমূল্য ধন, মানব-জনম, থাও কেন ভাই গরল সুরা, धन भाग कड़ि मरत, शांकि भारत, इतिनाग-गाम-मिनता । ১১१ बिविध गायास-नाको हैरदि। कर मिन बाद प्राहित दल, দেখবে চাহিছে দেশ ধাংশ হল ! আদিয়ে মাদক ভারত-ভূমেতে, सारमुध करत आशिल शकले। মুবা বুজ দলে ধরি একে একে, নিপাত করিল আলিয়া খনলু। कछ वमनीरक विश्वा कविन, কত শিশু দেখ, অনাথ হইল। বেথ গৃছে খনল আলিল, वारम वारम तत-"एशन ! एशन !" কোথা হ'তে হায় ! এ রাছ আদিল, কেমনে বলরে দেশেতে পশিল ?

विद्राह, मतिएह, वानिएह, विहरह ;

অকালে এ যে রে প্রলয় আনিল ! এ দেখে কেম্নে, আছ স্থির হ'য়ে? छेठेरत ! जाणिरत, विनास कि कन ?

ভগবান শ্বরি বিনাশহে অবি,

নইলে ভারত ভূবিল ৷ ভূবিল ৷ ১১৮ অজ্ঞাত

करना-कानारहा--यर । मति शत शत ।

শ্বাব তরকে বুরি দেশ ভেসে যার।

কোষা হ'তে সুরা এল, দেশ ছারখার হ'ল,

আবাল বণিতা বৃদ্ধ তা'রই পানে যায়। कर पूरा पूराकारण, शाफ कारलंड कराल,

বুদ্ধ পিতা মাতাগণে, শোকৈতে ভুবার।

কত শর্ত সাধ্বী সতী, অকালে হারার পতি,

शशकोत बरन भून कविष्क्र स्थाव।

व्यविष्ट्र क विशानन, ধু দু করি ঋবিরল,

প্তদ সমান লোকে তারি পানে ধার।

পড়িয়া সেই খনলে, ধনে প্রতি সলা জলে

অকালে পতদ সম পরাণ হারাছ।

ভারতের কি হুদ্দশা, আআন্দণ চভাল চাযা.

महाভाবে मीर्कार, छतु मह शह ।

छाड़े दिन जान छाड़े, अन श्वरं काब माड़े,

ভাই ভাই মিলে ষাই, দাধুজন প্রায়। मां कृत्म त्थाना कांकि, यन एक एक थीकि,

সবে মিলে কুডুহলে হরিগুণ গাই। ১১৯ অজ্ঞাত।

[জাতিভেদ, দরিন্ত ও হুর্ভিক্য ।] মরার-আডাঠেকা।

সাধের ভারত-ভূমি চাকিল কি অন্তকারে।

नदर जन्न यहाद्यादर, মত হয়ে প্রস্রোহে;

নিজ হত্তে নিজ গৃহ, ছঃখানলে দল্ভ করে।

কিবা মহৎ কিবা কুন্ত, কিবা ত্রান্ধণ কিবা শুদ্র, কিবা ধনী কি দরিদ্র, শক্তভাব ঘরে ঘরে ;

गत राउँ ভाই ভाই, काता প্রতি মেহ নাই,

नैणिग्राष्ट्र इःथिनीरत, वन्नाकृश-वननी द्व ।

धरे मल-भारभ हाइ, অনাহারে মৃতপ্রায়,

সহল ভারতধুবা ভিক্ষা করে খারে খারে;

কেহ চিব পরবাদে, ভাগের লাগরে ভালে,

জীবনেতে জীবদ্ত, অনাদরে অভ্যাচারে।

পথিক বলে এই পাপে, পুড়িতেছে বনস্তাপে,

ছঃখিনী ভারতনারী ভাসিছে নরনাশারে :

জণ হত্যা চাভিচারে, পেল দেশ ছারেখারে,

পাণিঠ ভাৰতবাদী, দেখে'ও তা দেখে না রে। ১২০

व्याननहस्त भिज

মৰি কিবা মুবতি ভীষণ ; धिक रेएडा क व-नवणन।

भिक्न सहस छुड़ि, ঘন দত্ত কটমটি: অণিছে উদর-মাবে ঘোর হতাশন। লোল জিহ্বা কুর দেই, কারো প্রতি নাহি ত্লেই;

ভারতবাসীর করে শোণিত শোষণ ।

সতীর সতীহ নাশে. মা হ'বে শিশুরে প্রাসে ; माहि कि माहि छि, अमि छुक्ति।

কভু ধরি উঞ্জ বেশ, ছর্ভিকে নাশিছে দেব; गक नक गाँदी गांद कविष्ट ठर्का ।

मातिरकात व्यक्तांचारत, दशन दशन ছार्वशांदा; লন্ধীর ভাগ্রার যেন দহে হতাশন।

ভারতের নরমারী, আলক্ত সকলে ছাঞ্চি; অপ্রের অত্যাচার কর মিবারণ।

ছিল্ল কর মোহপাশ, ছাড় দাসবের আশ;

চিরছংখী চিরদান, বিধির লিখন । যার গৃহে হাহাকার, __ গুছ-পুথ কোথা ভার :

ध्र-खर-नानगार त्नर निम्कान।

নাহন নামৰ্থা আর, পথিক বলে কর নার :

खिरिकटरा मन खान कर गमर्गन । **১**২১

দলীত মুক্তাবলী। 308 व्यात्वमा---र्वरति । भजीत विवादम, विषम व्यापादम, সোণার ভারত জাঁধার হইল। আছার বিহনে, মরিছে পরাণে, मतिम अनाथ मानव नकन। विक्र वर्ग, করিয়ে ব্যাদান, ভीयन आकान निकार आहेत। কাতর কুধার, কাদিছে তনর, (विधित्र माध्यत खन्य काष्टिन। ভাবনায় অবশ, ছাখেতে নিরাশ, করি'ছে হাহাকার হইয়ে আকুল। স্থিত স্থল, স্কলি তুরাল, निवारक माक्रप करेत अमल।

বল হে কি রূপে, স্থাথতে খুমাবে, ভারে যে ভিথারী জীবন তাজিল। এ ছোর বিপদে, কে পারে বাঁচা'তে

দ্রালু ঈশর ভরসা কেবল। ১২২

ত্রৈলোক্যনাথ সাল্যাল ।

বুখার জনম আমার, অর নাই থে'তে ছরে।

পরিবারগণ মবে, কুধায় জন্দন করে।

एइট मनाव-जाका।

প্রাণভূল্য পুরুগণ, হ'য়ে ব্যাকুলিত মন,

বলে শীঘ্র থে'তে দাও, মভুবা যাই প্রাণে মরে।

*

इक्कि इ'ला थारत, आमात नाहे वर्षतन,

কি রূপে বাঁচাব প্রাণ দেখিনে উপায়: হায় এই ছিল রে ভাগ্যে, জীবন যাবে ছর্ভিকে,

ভাবিলে নেই ছোর মৃত্যু, গতত নয়ন করে। আর কোন স্থান নাই, যথা গেলে অর পাই,

বিপদ-কালেতে বন্ধু কেই নাহি হয়;

কোপা ও হে ধনীগণ, দরিত্রে দিয়ে অশন,

রাথ ওষ্ঠাগত প্রাণ, মঞ্চল হইবে পরে॥ ১২০ রাজা মহিমারজন রায়। हिन्दू नगांदजत फूत्रवन्धां ७ (मनांधांत विषयक ।]

(কেন গো কালি লেংটা ফির-ফুর 1)

(আহা) গেল রে ভারত রস তলে। किছ विठात नाहे का हिन्दूत करन ।

অনিয়মের বাধ্য হ'য়ে দকল স্বেচ্ছাচারে চলে, (এ পাপ) সমাজের কেউ কর্তা নাইকো।

সাধ্য কি কে কারে বলে.

জমিদার ধনীগণ আছে ছষ্ট লোকের করতলে।

(দেখ) শ্রেষ্ঠ লোকের অন্নকষ্ট মতির হার বামরের গলে,

বিদ্যাশ্য ভট্টাচার্য্য কতই আছে মোলের দলে।

(তারা) সমাজের অগ্রপণা কতই কুকাজ তলে তলে।

রাসবিহারী কয় মাটি ফাট আমি হাব ভোমার তলে।

(তথন) ধরণী কর কি রূপ ফাটি গলিত তোমার নয়ন-জলে। ১২৪

वामविद्याती मृत्याभाषात्र

সঙ্গীত মুক্তাবলী।

বেহাগ—আড়া। হও হে সদয় বিভো! কেন নিরদয় ?-

বঙ্গের তুর্গতি আন প্রাণে নাহি সয়। ছরাচার দেশাচারে, যায় দেশ ছারেখারে,

দেশীয়েরা কুসংস্কারে, আছে অন্ধপ্রার---

ও বিভো জ্ঞানাঞ্চন! করি জ্ঞান বিভরণ, কর এ তুঃথ ভঞ্জন, দেহ পদাশ্রম, নাথ দেহ পদাশ্রয় । ১২৫ হরিশচন্দ্র মিতা।

আলেয়া--আজা 1 ও হে দীনদ্যাময়, কি হইল হায় হায়,

ভেবে সমাজের দশা, দেখে প্রাণ যায় যায়।

কি কৰ ছঃখেৱ কথা, কোথাও কোলীন্ত-প্ৰথা

দিতেছে অন্তরে ব্যথা, কত কামিনীর-কোখাও বা ক্যাপণ, কবে কত জালাতন,

কোথা অকাল-মরণ বাল্যবিবাহ ঘটার!! স্থ্য নয় এক রোগ, কভ দোষ করে ভেগে,

কিলে হবে স্থলংযোগ, ভেবে নাহি পাই। সমাজের পতি ধারা, মিছে অভিমানী ভারা,

থাকিতে নয়ন-তারা, আছে যেন অন্ধপ্রায়।

সবে স্বপ্রধান ভাবে, ভ্রমিভেছে নানা ভাবে, কেহই একভা লাভে, মর বল্পীল---

নব্য প্রাচীনেতে দ্বন্ধ, এ বলে উহার মন্দ, প্রকৃতি হিত-সম্বন্ধ, নাহি ভাবে এ कि দায়।

দামাজিক সঙ্গীত। বল নাথ কবে কবে, ছুদলে একতা হবে, যতনে করিবে সবে সমাজ-সোধন--কুসংস্কার কদাচার, করি সংবলিরিহার, রবে কবে জনিবার, নিয়ত তব সেবায়। ১২৬ হবিশ্চল মিত্র। [क्लीनक्मातीत (थम ।] (অল অল চিতা বিশুণ বিশুণ—হর ।) অহং-একতালা। शंग शीं शांत्र ! त्थरम व्यान यात्र, विन काय शाय! मरनव छु:थ। কেন পোড়া প্রাণ নাহি বাহিরায়, কেন এতকণ কাটে না বুক। কেন পোড়া বিধি রমণী গড়িল। যদি গড়েছিলি কেন রে তায়, পাপভরা এই বঙ্গে পাঠাইলি, ছিল না কি স্থান আর বরায় ? यनि वा वस्त्राह्य भार्तिहोन थाछा, क्न भाठीहिन क्लीमध्त १ কি আর তোমায় কব মুত্ত মাধা। কহিতে বদনে কথা না ষরে।

मधील मुकारनी। राष्ट्रे अञ्च छ मानवकनम, বিজকুল-জন্ম হলভি অতি, কুলীন বাহ্মণসম * * * আছে কে কোথায় এ বস্থমতী ? জন্ম-জন্মান্তরে পুঞ্চ পুঞ্চ পাপ পুঞ্জ পুঞ্জ আছে ছন্দ্রতি যার। পুঞ্জ পুঞ্জ যার কর্ম্মের বিপাক, क्लीम-क्याती-जनम छात। তার সম আর জনম-ছণিনী, পাপিনী তাপিনী রমণীকুলে, धरत या बरत या धरत या त्यांगियी, বিধিও ক্লম করে না ভলে। ১২৭ इतिकटल मिख

তৃতীয় অধ্যায়।

পৌরাণিক সঙ্গীত।

দক্ষজ, শিবের বিবাহ, আগমনী, শুস্ত-নিশুস্ত যুদ্ধ, এব-প্রফ্রাদ-চরিত্র, হবিশ্চল, নলোপাখ্যান, সাবিত্রী ও শকুন্তলোপা-थान, धिमस्मारताम, उसवृद्धास ७ मक्तृत मरवाम।

[नांत्र(माकि ।]

বাহার-কাওরালী।

या गांकायवी छन निद्यमन। তব পিতা যজ করে, হর-অপমান-তরে ;

जिलाक्द्र निम्बिन, লোকনাথে নিমন্তিতে কবিল বারণ ম

১। যথাযোগ্য সভাবণে সবে যভে যায়;

অবজ্ঞা করিয়া পত্র দিল না মা তোমায় :

জনক সন্তাবে ভাসে, আনন্দ উল্লাসে হাসে;

তব সংহাদরা তারা ৷ তারা তারাগণ ৷

২। চলচুড়-শিরে অর্ছচল্র শোভা পায়;

विश्वम भारम-ठक्क भागस्थ स्कार ;

इसनाय एवं कोर्स, गर्भ-इत्स ग्रमान्द्र ;

তব পিতা नक, तक करत विनातन ॥ ১২৮

व्यामाय मञ्जूमनाय

তাই ভাবি গো মনে, বিনা নিমজৰে, কেমন করে বজে বাই বলো না। नमानत्र भारतः, ভোমরা দবে যাবে,

আমি গেলে পিতা কথাও কবেন না।

একে নারী আমি ভিখারীর ঘরণী, বিধাতা করেছেন জনম-ছঃথিনী,

শিব-অপমানে হ'য়ে অপনানী, শিব-নিজে আমার প্রাণে সবে না । * ১২৯

यत्न माहोत्।

লগিত-খাপতার।

किर्द इस-महिशीषर्व, द्यारशस महस्यान,

शरजल-श्यरम छन दर्ग ।

শতুল রূপের প্রভা চরণ-সরোজ-শোভা, অলি তাবে মধুলোভা, ধায় কুতুহলে রে ৮

किया खित-भूलकिङ छाता, निमानात्यत भटनाहता,

তার মাথে ভবদারা, শোভে তারা পরাৎপর।।

है। दिएट यमन कांद्रा, तका भरत धराकत्म द्रत्र । ১००

माणवधी वांग्र ।

পৌরাণিক দঙ্গীত। [শিবোঞ্জি।] कार कावि लो। मान-खन ।) ভৈদ্বী—একতালা। ছবে কুলকণ ভথায় বিলকণ। সতি যেও না প্রজাপতির যজে, यिव अभेगांग, इत्र घळ-छान, खेराण मर्च-तमान, গুহে নারিবে জীবনে করিতে রক্ষে। व्यामि श्रमानतामी, श्रमान ভानतामी, দেবের যজ্জ-ভাগে নহি অভিলাযী; ত্যকে শোণার কাশী, চিতাভশারাশি मानि, मिनि मिनि कत्रि एह जिएक ॥ অস্থ এখার্য-মাৎস্ব্য-ব্যবহার, মান অপ্যান স্থান আ্যার: य या वरन वरन इति मिन छात : से साम् सानी करत रह नीरक । ১৩১ হরিনাথ মজুমলার। [मनीव छेकि।] ম্লতাৰ-কাওয়ালী। তোরে যেতে দিব না মা শঙ্করী। আমার মন সরে না, প্রাণ বুরো না, त्याङ मिरङ मक-शूती। ভূই গেলে আর আদ্বিনি, धारा दावव मन-त्याहिनी;

বদীত মুক্তাবলী। 338 মা বলে আর ডাক্বো কারে, সেই ভেবে মরি। ১৩২, রাধানাথ মিজ। [সভীর প্রতি শিব।] (তোমারি করণার নাধ-ছর।) ভৈয়বী-ভাড়া। হৈও না হেও না সতি বাবে বাবে করি যানা. ভাবনা-সাগরে শিবে তব শিবে ভাসাইও না। পাঠাইতে দকালয়ে, नाहि नग्न अ समरत्र, ভয়ে যে কাঁপিছে অঙ্গ অমঙ্গলের এ স্থচনা। **जारे नकू माठा लिएक.** क्षे नारे सात क संगटक. শাধনের ধন শতী জেনেও কি তা জান না। দতী-মন্ত্রে বন্ধচারী, (আমি) দতীরূপ ভূলিতে নারি, সভীধান সভীজান, সভী যে পর্য সাধনা, कि भागाम कि भागाता. কি শহুনে কি স্বপনে. বতীগতপ্ৰাণ শিব সতী বিমে বাঁচিবে না । ১৩০ व्यानम् ठल भिद्य। [मठीत डेकि ।] (খাবে কিছে দিব আমার-জর ।) মুলতাৰ—আড়া। याहे यक दिश्वाद करक-छ्यान। অমুমতি দেহ পতি মিনতি চরণে। ভগ্নীগণ যজ্ঞ-জাশে, গেছে দব দে জাবাদে, এখন আমি কৈলাবে, থাকি হে কেমনে?

যাইতে বাপের ঘরে, সদা সাধ এ অন্তরে ;--**लिट्नम मिट्नक-७८**व, व्याटनम शयरन । বিবাহের দিন থেকে, দেখি নাইি কভু মাকে ; নিবেদি ভাই ডোমাকে, বিধাদিভ মনে। जात अनिलाम माथ, महर्वि मातरमत सूर्थ, আমার লাগিরে মাতা পাগনিনী প্রায়, অনশ্বে দীন্মনে ভূতলে পড়িয়া, हा मिं। हा मिं। वर्ष कविष्क द्यापन। আখার এ কোমল প্রাণ কাঁদিয়া উঠিছে रमिएक मार्यदा : তাই নাথ বারে বারে করি অন্থরোধ, দিবদেকভবে, আদেশ আমারে, ঘাই পিভার সদন। ১৩৪ রাধানাথ মিতা। খিৰিট খেমটা। वाना मरक स्थल, या त्मरन त्काल, भाग मनाहे मिरल, जाकि करा मा न'रल ।

वारा नामन काना, या नामनी त्मरत, केड बोका मां, खरत तन्त्रदा तहरत. रबहे दबहे दबहे, आश्र दबदश दबदश,

या त्यदम्हि दव न्यायवा मादबन ८६८न । ১०६ শিরিশচন্দ্র ঘোষ

```
১১৪ সঙ্গীত মুক্তাবলী।

[সভীর উব্জি।]

বেহাগ—ধামাল।

কুবের ভ্যণে কি কান্ধ রে আমার।

নিত্য ভিক্ষা ভবন বসন নাহি আসন ঘর॥

১। নিত্ব আমার বিশ্বনাথ ভন্ম মাথেন গায়;

আভরণ প্রয়োজন কি আছে রে আর॥

২। সরাই বলে সভীর পতি ক্লেপা মহেশ্বর;

শুশানে মণানে ফিরে কেহ না মানে ভার॥

০। হরি কহে সবিনয়ে সভীর ব্যবহার;

পতি কেবল সভীর গতি পতি অলপ্তার। ১০৬

হরিনাথ মজুম্দার।
```

প্রস্তীর উদ্দি। বিবিট-মধানান।

মা দেখে ও বিধুবদন জীবন বৈশ্য ধরে না ।

জানি দতীর মতিগতি, বিনা পতি-অহমতি,
কোথাও করে না গতি, বুঝি অহমতি পেল না।

মম কলা বত তারা, যজ্জতে এদেছে তারা;

তারা বিনা নয়নতারা, জলধারা ধরে না। ১৯৭

[সতীর উক্তি।]
বেহাগ—বং।
জানি মা তোর দয়া মায়া, পিতার বিবেচনা।
ভিতারীর নারী বলে, মা গো নিমহণ দিলে না।

इतिमाथ मसुमहात।

পতীকেন হজে এল না।

। পিতা আমার যজ্ঞ করেন বার্জা পেয়ে নারদমুখে; আপনি এগেছি যজে যা গো দেখিতে ভোষাকে:

শস্তাযণে দিয়ে পত্নী, আনলে যত মেহপাত্ৰী, আনি কি মা তোর কথার পাত্রী, ছু:খীমী বলে হলেম না ॥ ১৬৮ हिताश मञ्जूमनात ।

विकाम-चापार्कका ।

জমনি ! আমি আর, আর গো, তোমার কোলে যাব না ৷

ছংখিনী বলিয়ে যত কর শ্লেহ নকলি জেনেছি জানাতে হবে না। আদরিণী মেয়ে ছিল মা খত, দকলি যজে হলো নিমন্ত্রিত, कि लारवत दशायी आमि मा थठ.

কথার কথা এক বার আমায় বল্লে না। ১৩৯ জঞ্জাত।

প্রজ-একতালা।

পিত। আমার কথার কথা বলে না। আর যত ছিল মেয়ে, আনলে দব পত্র দিয়ে

ভিথারীর মারী বলে ভাচ্ছিল্য কল্লে মোরে,

आमि कि कथात शादी इतम ना। ठाइ रति ६ जनती, जामि द्य दहे छ: थिमी,

एश्विमी राल माछ करत मा। ১৪० महम महीत

প্রিক্তীর উক্তি।] होति-थाश्रदिका।

আর অভিযান করিল নে মা, কমা দে গো ও শছরী।

ছুনয়নে বহে ধারা মা হ'ছে কি দইতে পারি।

336 সঞ্চীত মুক্তাবলী। ভূমি নও সামান্ত কল্তা, ভরজায়া ত্রিলোকমান্তা, আছি মা তোমারি জন্তে, পথ নির্বীক্ষণ করি । ১৪১ িসতীর উক্তি। ললিত-বিভাস-একতালা। প্রচরণে স্থান দাও হে প্রাণ যায় প্রাণকান্ত। পিতা দক, হ'রে কক, দহে বক আজ নিতান্ত । তব আত্তে আজ অবজে, আসি যজে হ'ল মানাপ্ত। कमा कर, ८२ महर, ८म लाल इत, जिलालाख । ২। নিষেবিলে সদানন্দ, তাইতে আমি করি धन्ध, বলিলাম ভোমায় কত মন্দ, হ'য়ে আভ : তার প্রতিফল, হল সফল, পতি-অহশ-গরল, একান্তঃ হ'রে নাবী, সইতে নারি, পতিনিন্দা অবিশ্রান্ত। ১৪২ र्शिनाथ मक्ममात । প্রিপতীর উজি।] বিভাগ—আড়াঠে ক। । काशांगिमी करत स्मारत काषा लग मा लिन करन । महा कि मा इ'ल आहत प्राथिमी अनमी बता। হেন যদি ছিল মনে, কেন এলি আ ভবনে; दिति त्लामा धवामरन, कामि त्य मा कांचि करन। वानि भाभ-रक्क-शाम, পতিনিশা ভনে কাথে, নিজ প্রাণ অভিযানে, তাজিলে মা মায়াবলে। স্থপনে দেখিল যাহা, পক্লি ঘটিল তাহা :--মতী-নেহ তাই আহা, নুটা'তেছে ধরাতলে।

ভাজ মান মানময়ী ধরি তব কর। বারেকের তবে নয়ন মেলিয়ে,

মা বলিয়ে ভাক একবার। কাতন অভবে ডাকে বাবে বাবে,

অভাগী জননী ভোর :--

ফুড়াক ভাপিত প্রাণ ডোর কথা ভমে। ১৪০

त्रांशांनाथ मिछ।

[প্রস্তীর উক্তি।] যোগীয়া ভয়ারা-কাওয়ালী।

তোরা দেখ গো সতী কথা কয় না।

आमि (केंट्र ट्केंट्र शहे माता छत् ति द्य हां मा। जारि (यन, कथा कछ,

তাপিত প্রাণ ভূড়াও :

व्याद इदेश नय मा।

নিতে এলে সদাশিব,

वन भा मा कि वनिव ;

भारत क'रत मारक दक्राल.

कि करत मा शिल हरते :

তোর এ ভাল দেখার না। ১৪৪

ৱাধানাথ যিত।

```
[ निरवत छेकि। ]
                 মূলভান-একতালা।
               करें त्न इःशिनी धनी।
               ভিগারী হরের ভিগারিণী।
               কোথা সে যোগীর যোগ-ভঙ্গিনী
               मील-मिलमी, क्रिय मिल।
               करे रंग श्रावतं सहस-छाता.
               দে বিনা হ'ৱেছি নয়নহারা:
               करे एन कामिमी, नम-रुतिनी,
               भागन गिरव भागनिमी । ১৪৫
                 [ मनीत छेकि । ]
                ( অনি কুখনরী উবে—ক্রন।)
                    ললিভ-বাড়া।
       তাজে মণি-মন্দির চতুর্জাল রছ-আসন।
       कि विशाम छ या गठी, करवह बाक धवार भारत ।
  । कि द्वार्थ रहित्न भीतम, ७ मा जाता सगरभीतम ।
       इत-काम एवं गर्ककण ; (कृमि) गर्ककायव गर्काष्ट्र बने ।
  १। यथम आणि यखान्त,
       वित्नाहम जानि वि-त्नाहत्मत्र कत्न,
       जिल्लाहमी धर तल, जिल्लम जिल्लाहम ;
भाक्षीत द'रा धवन, दक्सान चाहे शिरदा नमन :
পুধা'লে দিক-বদন হরি। হেরি) করিবে কি নিবেদন ॥ ১৪৬
                                   धतिनाथ सक्त्रमात्र ।
```

मझील भूख्यावली ।

556

क्ता करह ननी कि विश्रम घरिन।

স্বৰ্ময়ী মা আমার কেন রে বিবর্ণ হ'লো ঃ

লজিং আদি শিব-আজে, আদিয়া অশিব যজে,

जकन्यां किया कर्या द्वित थान ना दश देवर्ग,

হর-ছাদি করি ভাজা, শ্যা মারের ধরাতবে। ১৪৭ मागवधी जात्र।

ললিত বিভাদ-ভাড়া।

धारे मना राता छारे नमी, गांक धान राष्ट्रहात । কার কাছে দাঁড়ব আমরা, কে খাওয়ারে ক্ষুধা পেলে ।

ভাই খামরা কি করিলাম, কেন দক্ষালয়ে এলাম,

प्तरमधी मा रातारेगाम, अरे हिन कि अरे क्लारन । ३ 8 भ

मलन माहेदि । [भिरतत छेकि ।]

কৈরবী--আড়াঠেকা ।

আৰু একা কেন এলি নদ্দী কৈলাশভূবনে।

কার কাছেতে রেথে এলি রে সেই ভিথারীর ধন তারা-ধনে। श्रक्षम कृतील कि विवत्तं, श्रुक्ताम नव तम दत अथम,

অন্তির হ'তেছে যে মন, না দেখে সেই সভীধনে ৷ ১৪৯

यमस याडाव।

[शिद्दत छिकि।]

বিভাগ-মধ্যমান ৷

নন্দি। কি শুনালি বে সতী ছেড়ে গেল।

আমার এ পাধাণ প্রাণ কেন না বেক্লো ৷

কি করিব কোখাই এখন যাই,— আবার বুকি কৈলাস ছেড়ে শ্মশানবাসী হ'তে হলো। ১৫০

াবার বাক কেলাস ছেড়ে শ্মশানবাসা হ তে হলো ॥ ১৫০ —— মদন মাটার।

বিভাস বিবিট—বাসভাল।

মতী-শোকে পতিত-পাবন, পশুপতি পতিত ধরা। অন্তর রজত-গিরি ধরা লোটার না যায় ধরা।

২। জীবনতারা বিনা তারাপতি, হব রে আজ জীবনতারা,

অন্ত ধানি নাহি শুনি, ধানি কেবল ভারা ভারা, বিনয়নের বিনয়ন-ভারায়, ভারাকারা ধারা।

ং। ও রে, নিরানকে স্থানক, নলীকে বলেন হরা,

কি বলিলি ও রে মন্দি, তারা কি হলেম হারা; ভবের আপদ যায় রে দ্বে, চিন্তা কবি যে ভারাপদ;

छाडाशन सक्तराच्छ सिनि मन्त्रि कि नरवान ;

কোথা আপদ-ভঞ্জিনী স্বাদি-বঞ্জিনী তারা। ১৫১

eরিনাথ মলুমলার।

পিপ্—কাওয়ালী।

চলিল বীৰভন্ত বীর দক্ষবজ্ঞ বিনাশনে।

বাসেতে অভূত ভূত, ভূতনাথের আজা পালনে।

। যজকুও বও ভও, দেখিয়া প্রচও কাও, ভও কাপে পলাহ হিলগণে;

*

পোরাণিক দঙ্গীত। (ওরে) ভূতে ছাড়ে হত্তার, চুর্ণ দক্ষ-অহংস্কার, ছিঃমুও কদাকার, ধরা আসনে । जशक्षत शानवाना, निवादत काशांत माथा,

त्तवाताथा भिवटेमळशर्व ; ও রে) তালে তালে নাচে তাল, বেতাল ধরি'ছে তাল, উপস্থিত প্রলয়কাল দক্ষভবনে । ১৫২

হরিনাথ মজুমদার।

[शिरवंद्र डेंकि ।] মুলতান—জলদ তেতালা।

মেছে আর কেন ?

यनि छाजिना यांनन्मभी यानन्कानाः।

বিনে সভী শশধরো, কৈলাসো ভূধরো,

र्शा जीवाता अवासा । ३ । याद्वा लागि जिका मागि, नश्माती मक्करता द्यांगी,

শিব সর্বাপ্ত শে ধনে, না হেবে ভবনে, तत्व क्यान बीवामा १२ 1 300

মনোমোহন বস্থ

শিব ও শতীর মিলন।

[किन्नद्वत्र शाम ।] লাহানা-- ধামাল ।

কৈলানো ভূধবোপরি, হার আজ একি হেরি--

বিরাজিত হরগোরী—কি বুগল মাধুরী!

দঙ্গীত মুক্তাবলী। 333 রজতে কনকোকান্তি মিলিল জা মরি! আৰ অন্তে বিভূষিত, আৰ চুয়া কন্তৱী ! একাঙ্গে ভূজনগণো, একাঙ্গে মণি কাঞ্চনা; আৰ বাঘান্ববানি আৰ কৌন বসস্তনা; व्याश्रहे करे। कृषे, व्याश भितत कपत्री ! ३ । गार्बनहार अक्षरता, यदि कि काथि दक्षरता ! इन् इन् इनिट्डिह, किना गार्च लाहरमा ! क्षांत मुग्यता, बनता काल कति। २। ३६८ मत्नारमाञ्च बन्धा ভৈর্বী-একতালা 1 (गति) इत्रतास इति दिन । হর-ভূথ হরে, রজত-শেথরে, व्याता करत राम भवरमधी। । হর-গৌরী-মিলিত অন্ধ কি স্থানর, আধ ধবল গিরি আধ শণধর; काथ दिनी काथ करें। मरनारुत, আধ আঁথি জবা আধ যে সরসী ১ দক্ষিণ শ্রবণে ধুভুরার কুল, रामकर्ग वर्ग-कू धत ककून,

থগ-চঞু নাদা আব তিলফুল,

বলয়া কল্পন কর শোভা কর্ব, অঞ্নশিহাবে, মুনি মনোহরে;

व्यवदत्र मा वदत्र मधुत है। नि

गृशन চরণে वर्ग मृशूत वांक,

इतिहत्तल अनत्र-गरतारकः হরি দরশণ করে দিশি নিশি॥ ১০৫

[শিবের বিবাহ বিষয়ক ৷] হুরট-কাওরালী।

इतिगाथ सञ्चमतात ।

জায় রে বেতাল, সাজ তাল, বাঘছাল, হাড় মাল, कान एक एवं छेमांकारछ।

আয় রে তোরা বাব হরা করে গিরিবর-বাসে,

वत्रतार्थ वत्रमारत जाएड । আর কালবিলয় কেন, কাল ভুজন্ম আন,

শুভ কাল হলে। রে কালান্তে। যাহার জন্তে ততু জ্বা, হনম-যত্রণা হরা,

নারদ-বদনে পেলেম ভত্তে ৷

विस्त छातिनी, छत्रशतिनी, आहि त्य द्वारथ निया तक्षती, পার না কি জাতে । ১৫৬ দাশরধী রায় ।

ত্বট—কাওলী।

वाहे बाहे भागाहे कि यानाहे, काब माहे ध बामाहे.

দেখ মিছে একি রঙ্গ।

যত মেয়ের হাট পেয়ে, অঙ্গেরের মাথা থেয়ে,

আবার হরেছে উলগ্ন ঃ

দঙ্গীত মুক্তাবলী। 758 ठन (गा मझनी ठन, नागा (करहे (यरन अन, এন না বুড়াকে করি বাঞ্চ। र्थिया मरहरणत रथं मा थारण, मति जारम वृत्क अरम, পাছে থাবে লো ভুজন। ब राष्ट्र वार्था, व वारतरत वर्गना । দিবে গিরি থেয়ে কি অপান । आहा मति हि हि स्मरम, ध वान नाविन करम, विद्यार्थ मात्राम वृष् तक । माट्यत छेमात वत, (थणा इत निशचत, শিরে জটা উদর মোটা কি ঘোরঘটা ভূতের সঙ্গ। ১৫৭ বিবিট-বেমটা। मृति এলো दङ, পরিধান বাঘাস্থর, মাথা ভদ্ম কলেবরে। मार्थव भिविचन-मिन्नी, हि मा, अहे चरत रकेंछे चरत । क्रम (मर्थ नहें मरनम रहरम, व्यक्तिमाना गनरमर्थ, वत आम कि वलाम वाम, त्मारवत मीगरत। বুড়ার কপালে আগুণ, কেবল মাত্র একটা গুণ, মুখে বামগুণ গান করে ৷ ১৫৮

ৰাখাল-খং।
ভোৱা কেউ ধৰ্জে কুলো যাস্নে ওলো কুলবালা।
মহেশের ভূতের হাটে, এ সব ঠাটে সন্ধ্যা বেলা।

যে রূপ ধোরেছিল ভোরা, চিত্ত উন্মত্ত করা,

চাঁদ যেন ধরার ধরা, থোঁপার ঘেরা বকুলমালা। ১৫৯

ললিত খিঁবিট—খাঁপভাল। পঞ্চ বদনেতে একবারে দিতে বরমালা।

গিরিপুরে দশভুজা হন দুর্গে গিরিবালা।

দাঁড়া'লেন উমেশ সন্মুখে উর্দ্ধ কর করি, ताका हक्ष गाका अपधातिनी हतस्मती,

নির্থি রূপ গগনে চঞ্চল চঞ্চল।।

কিবে কাঞ্চন-কবরী আর, কমলাদি কুস্থমহার कमल करत कवि विमलवनमी विमल।।

দশ কর-আভায় দশদিক অন্ধকার হরে, প্রতি করমধরে কত শরদ-ইন্দু শোভা করে,

নধর হেরি চকোর স্থামানসে উতলা ৪ ১৬০

मागतथी तात्र।

[आशमनी।] ((शोवठसी ।)

গিরিবর! আর আমি পারিনে হে,

व्यताथ निष्ठ छेगाता।

উমা কেঁদে করে অভিযান, নাছি করে স্তন্য পান,

नाहि थात्र कीत ननी मत्त ।

জতি অবশেব নিশি, গগনে উদয় শশী,

বলে উলা ধরে দে উহারে।

के कि स्वाल का थि, सिन अ स्थ प्रिस, यादा है हा महित्व कि शादा ॥
का व्याव का व सा सा विन, धित्व कत-अकृति,
व्याव का व सा सा विन, धित्व कत-अकृति,
व्याव का व सा का का नि का था दा ।
का मि कहिनास का व, के नि कि दा धवा या व,
क्षित कि दा शिविवत, कि त वह मसा कत,
वा विदेश का का नि का दा ।
मान कि हित्व हो नि, धित सा अहे नि अ मिन,
सुकृद नहेवा निन करत ॥

मुक्रत दरविशा मूथ, छेनिक महान्त्र्य,

কহিতে কথিতে কথা, স্থানিপ্রিতা জগন্মাতা, শোরাইল পালম্ব উপরে। ১৬১

त्रांमध्यमान ।

व्यमानी द्व-এक्छाना ।

আমার উমা সামালা মেয়ে নয়। থিরি ভোমারি কুমারী তা নয় তা নয় ঃ

স্থাপ্ন বা দেখেছি গিবি, কহিতে মনে বাদি ভয়।

ওকে কার চতুর্মুক, কার পঞ্মুথ, উমা তাঁদের মন্তকে রয় । রাজর জেখরী হ'রে হাস্ত-বদনে কথা কয়।

রাজর জেশ্বরা হ'রে হাস্ক-বদনে কথা কয়। ও কে গরুড়-বাহন কালো বরণ, খোড় হাতেতে করে বিনয়।

পৌরাণিক সঙ্গীত। लमान छए। मूनिशरण, त्यांश यांत्न यांद्र ना शाय।

ভূমি গিরি ধতা, হেন কতা।, পেয়েছ কি পুণা উদয় । ১৬২ আজ ভভনিশি পোহাইল তোমার। এই যে নিদিনী আইল, ররণ করিয়া আন ছরে। मूश्रणमी तमथ अपनि, मृत्त यादन कृत्यतानि,

ও চাঁদ মুখের হানি, সুধারাশি ক্ষরে, ভনিয়া এ ভভ বাৰী, এলো চুলে ধায় রাৰী,

दमन ना मध्दत्। গদ গদ ভাবভরে, বর বর আঁথি করে, भाइ देति शिविवत्त, अमिन काल शना शता ।

পুন কোলে বসাইয়া, চারু মুখ নিরশিয়া, চুথে অরুণ-অধরে।

বলে জনক তোমার গিরি, পতি জনম-ভিগারী, তোমাহেন স্কুমারী, দিলাম দিগহরে। যত সহচরীপণ, হ'য়ে আনন্দিত মন,

হেলে হেলে এলে ধরে করে। কহে বৎসরেক ছিলে ভুলে; এত প্রেম কোথা খুলে, কলা কহ মুগ ভূলে, প্রাণ মরে মরে ৪

कित दामश्रमान नारन, भरन भरन केल हारन,

ভাবে মহা আনন্দ-লাগরে ৷

জননীর আগমনে, উলাবিত জগজনে. বিবানিশি নাহি জাইন আনন্দ পাশরে ই ১৬০

त्रायक्षमाम (मन।

চৈতন্তপ্রপিনী কোথা ল্কালো।
কহিছে শিধরি কি করি অচল,
নাহি চলাচল হলাম হে অচল,
চঞ্চলার মত জীবন চঞ্চল,

ভাঞ্জের নিধি পেরে হারালো।
দেখা দিয়ে কেন এত মারা তার,
মায়ের প্রতি মারা নাই মহামারার,
ভাবার ভাবি গিরি কি দোব অভরার,
পিক্টোবে মেয়ে পাষারী হলো॥ ১৬৫

নাশরধী রায়।

কৈ ছে গিরি কৈ নে আমার প্রানের উমা মন্দিনী।

माम, उर अकार क धाला उपलक्षिते।

विञ्जा दानिका आभाद छैमा हेन्द्रवहरी

কক্ষে লয়ে গজানন গমন গজগামিনী।

মা বলে মা ডাকে মুথে আধ আধ বাৰী। এ যে কৰি-অৱিতে কবি ভৱ, করে করিছে বিপু সংহার,

পদভবে টলে মহী মহিষনাশিনী।

প্রবল প্রথবা মেয়ে তন্ত্র কাঁপে দরশনে,
জ্ঞান হয় ত্রিলোকখন্যা ত্রিলোকজননী। ১৬৬
দাশব্ধি রায়।

ললিত—একডালা।

ওগো নিজাদেবি! কেন বঞ্চনা করিলে মোরে।

মিলাইয়ে উমা-ধনে পুন কেন নিলে হবে ঃ

যে অবধি তারা-ছারা, মুদি মা আৰু আঁথি-তারা,

ছ্নয়নে শতধারা, বহিছে স্লাই--

আজি নিস্তে এলে যদি, মিলাইলে হারা-নিধি,

শেৰে প্ৰথে হয়ে বালী, কেন লুকাইলে তারে।

श्राः व्यामि मृति वांथि, नग्रम कविका थाकि,

एक जाम भूग जाय, नहम कारहा शाक, छैमा धाम प्रामाध प्रथि, दर्गत दा ठावम्थ—

আমার সে ধর্ণলতা, না বলিতে ছটো কথা,

निता स्रामात क्षारन राथा, मिल जाता क्रायाकारत । ১৬१

হরিশ্চল মিত্র।

मश्रीठ मुकारवी। 300 খটতেরবী-একাতালা। গিরি, কি স্থাও হে সমাচার গ বলতে সেঁ অপন, না সরে বচন, থেদে পোড়ে মন বহে অঞ্ধার। নিশিতে যেমন, ভেবে উমাধন, जाराक जांशांत्र मुक्ति महस, অমনি লগনে করি দরশন, শিষ্করে বৃষয়ে যেন মা আমার। বাছার নাই সে বর্ণ, নাই আভরণ, ट्याकी इडेग्राट्ड कालीत नत्त्व, হেরে তার আকার, চিনে উঠা ভার, সে উমা আমার, উমা নাই হে আর। উমা বদিয়ে শিয়বে, কহিল কাতরে, কত আর দয়া থাকিবে পাপরে. ভিথানীর করে, সমর্পন করে, কেন তথ ফিরে, লও নামা একবার। ১৬৮ इतिश्वन मिज ি গিরিরাজের উক্তি। बि विडि-पहड़ा। রালী, এক ছই তিন, করে প্রতিদিন, পণিতেছে দিন, উমা নার ঘা'বার। বে যে দত্তে শতবার, করে ঘর ছার, কিছতেই তার, শাস্তি নাহি আর।

উঠিলে ভাস্বর, করে জুড়ি কর, আশু অন্তগ্ত হও দিনকর,

आंवात अल निভावती, कटूर विनय कति, পোহাও গো সর্বারী, কেন থাক জার। দে যে পুরোহিত পার, প্রণমি অধায়,

কল্ডে-মাৰ করে, কও গো জামায়,

बारेल रा करन, श्रीराज स्म करन,

উমা জগৎধক্তে আসুবে গো আমার।

যেয়ে শেকালিকা-পাশে, কাডরে জিজাদে,

কত আর বিলম্ব কুম্ম-বিকাশে, ফুটলে তোমার কল উমা মোর আলে।

নাশে গিবিপুর্বাগীর মনের আঁধার।

क'रनना केंनिया जायादा जिल्हारम.

करन शारत छेमात्र जानिएक देकनारम, যাব বলে, অরি জাখি-মীরে ভাবে,

वरन भरम देवदी भारम मा दव कात । ३५৯

इतिक्छ मिति।

[পুরবাদীগণের গীত।]

ঝালিয়া—কাওগ্রানী ।

तानी कत्त, कत्त, कत्त, मणनाहादन।

इरार्क् ७ केष्म १

শহ ওহ গণপতি, তথ্মবতী,

গিরিরাজের হ'ল অই আগমন;

```
मश्रीक मुकावनी।
500
       বেরো গো বেরো গো কেন গৃহে আর।
        দেখো সে কেমন শোভা ভোমার প্রাণ-উমার,
        গিরিপুরে আজি গো চালের বাজার,
        কার শক্তি বর্ণে রূপ অভয়ার,
```

লছ গো বরণ করি, শঙ্কর আর শুভঙ্করী, ভাক দব পুরনারী, করুক জয় উচ্চারণ। জুংখের নিশি হ'ল তোমার অবসান,

ছারেতে দাঁড়াল এসে ঈশানী সহ ঈশান, হেরিয়ে জুড়াল তাপিত মন প্রাণ, আনন্দে উথলে গলিয়ে পাবাণ।

অই শুন সব বাদ্যকরে, পুনদল বাদ্য করে,

মঙ্গলার মঞ্জল গান গাইছে গায়কগণ ি ১৭০

[द्रागीत छेकि ।] महात-यशमान।

कई छैमा कहे सामान कहे छैमा कहे।

উমা উমা করে করে আমাতে আর আমি নই। শয়নে প্রপনে উমা, আলাপনে মনে উমা,

खनमाना र'न छैमा, जानि मा लात छैमा नहे।

ভেবে इ:थिमी जनमी, अन कि शर्गणक्रमनी,

चुनिन कि इ'न अमनि, পেলाम कि सानसमग्री।

मा कविशा मिष्ड इन, वन शा रखाता मका वन्, মদলার স্থমদল, আমার ত জপনা অই। ১৭১

इतिकस यिक

ষ্ণার-মধ্যমান।

থাক থাক থাক নহনধার।

নয়ন ভরিয়ে একবার নির্থি নর্নভারা।

মা হেরে যে উমাতারা, বহিছে প্রাবণের ধারা,

এল সেই নয়নতারা, এখন ধারা এ কি ধারা। নির্থিতে উমাধনে, वहिंदिनद् मांथ भटन,

হেরিতে সে চক্রাননে বাধা দেও এ কেমন বারা।

তকে পলক বাধা চোকে, দেখতে দেয় না অনিমিধে, তুমি তাতে হলে বাদী, হেরি বল কেমন ধারা। ১৭২ इतिकल भिजा।

[মেনকার উক্তি।]

(বুধা রে লক্ষণ করিয়ে বতন-হর।)

छमा, कवि कि शामा, देवनाम-इसमा, हत्र-मरगात्रमा, हति कि छेनत्र।

মা বলে এক বার, সার কোলে আমার,

তোবে না ছেবে সংসার ছেরি শুশুমর।

रेमण मीनायत मित्रिय यथम, ठलमात ছवि जुदमस्मादम,

मत्न পড़ आशांत्र छमाव तनम, कित्रश्रश ।

छथन गढ धारव छरक वाविधावा वय ।

শরনে খণনে উমা তোবে দিখি,

(আমার) সভীর প্রতিমা সদা ক্ষদে রাখি,

गहा यटक गाहि डेमाटत नित्रिय.

मधीं मुख्यानवी। 5 08 कां क्ति-ज-ज-ज-अ-आ१। সতী ভূই মা প্রস্তীর স্থাধের নিলয়। ১৭০ भीरमणहेदन नम् ললিত খিৰিট-খাপতাল। विशास मा (कमवतनी क्षतायात नाम काला) হেরি গণেশজননীরূপ রাবী ভাসে নয়নজলে। ত্রকারি বালক যার-সেই গিরিবালিকা শিবদারা, পদত্রে বাল ভাতু বাল চল্ল বাল ভারা। ভাস্থ জিনিয়ে তমু তন্য কোলে দোলে ৷৷ জামি মনে ভাবি উমাকে দেখি. कि छेमा कुमादा सिथि, कान अप मैपिया दाथि नग्रन पृथल। দাশরথী কহিছে রাঝি ছই তুল্য দরশনে, হের বন্ধ-মগ্রী রূপ বন্ধরূপ গলাননে। ব্ৰহ্ময়ীর কোলে ব্ৰহ্ম ডাকে মা বলে ১.১১৭৪ ললিত বিবিট-ভাল বাণতাল 1 वाक्षा किकू भूग छत्य हव हत्रमहिति। রয় যদি মা শত মুগ এ সুখ সপ্তমী নিশি। মনের মানদে তবে, ও মা সর্কামললে, जता बाह्यतीत वरण, পুঞ্জি পদ বিষদলে, মরি শেবে মোঞ্চ পদ হ'বে অভিলাবী। এগে তিন দিনের কারণ, নতে ধেদ নিবারণ, আন্ত ল'য়ে যায় গো মা আন্ততোৰ আদি।

ইরবাদে ইরবণে ইর কাল হরপ্রিয়ে, चार्गात्तरक वि'रह या'रवन चार्गान-निवानी ॥ ১१६

मागत्रथी तात्र।

[আগমনী।] অহং - একতালা।

গা তোল গা তোল বাঁধ মা কুছল, ঐ এলে। পাষাণী ভোর ঈশানী।

যুগল শিশু ল'রে কোলে, মা কই আমার বলে, ডাক্ছে মা তোর শশধর-বর্নী।

ত্রিভুবনে ধন্যে, ত্রিভুবনে খন্যে,

তোর মেয়ের ভূলনা নাই গো রাণি।

আমরা ভাবিতাম ভবের প্রিয়ে, আজি গুনি তোর মেয়ে,

ঐ নাকি মা ভবের ভরহারিবী। ধলি যে বছ উদরে, ছোর মতন দংশারে,

রত্নগর্ভা এমন নাই রম্বী।

মা তোমার ঐ তারা, চল্লচ্ছ-লারা,চল্ল-লর্পহরা চল্লাননী।

এমন রূপ দেখি নাই কার, মনের অন্ধরার,

रति या छात् रत-मद्यादमाहिनी।

পশিত—আড়াঠেক। ।

আয় মা উমা আয় কেমন ক'রে ভূলেছিলি।

मा व'ला कि मान नाहे मा, चत्र लिख मर कृत्व लानि ।

मनीज मुकावली। 306

यथम जुड़े मा शिक्षिष्टिनि, याताद दिना कि विनिन, क्षेत्र मा आमरता व'ला, अक्षरत महम बृहाति।

छड़े ह एक मा किएम शिल, किमन करवा शा ख़िलिल, পাহাণের মেরে ব'লে নিজেও কি পাহাণী হ'লি ?

राष्ट्र मार्ग आना हिल, छेमा आमात तक र'ल, দে আশার আশা দূরে গৈল এখন কতকাল পরে এলি। ১৭৭ কেলারনাথ চক্রবভী।

ললিভ বিভাদ-আডাঠেক।।

अकरात छेठ मा शीति। পূর্কদিক প্রকাশ হল পোহা'লো শর্কারী।

উঠ আমার প্রাণ-কুমারি, ডাক্ছে তোমার প্রচরী, মঞ্চল আরতি করি, বিধুবদন হেরি। ১৭৮

হরিমোহন চট্টোপাধ্যার।

थागाहैश--थाड़ा ।

छेमा जामांव कमन हिला श्रवति मात् ভনেছি ঈশান নাকি খুশানেতে বাদ করে।

পরে দলা বাঘাছর, ভক্ষমাথা কলেবর,

অহি বলা শিরোপর, থাক গোরি কেমন করে।

সতা কি মা আর বিনা, উপবাসী পাক উমা,

দিনাত্তে আর জোটে না, জামাই তাই কি ডিকা করে

গলামামে মতা মাকি, যতত মন্তকে বাখি,

শুনেতি পিনাকী নাকি, অধিক যতন করে।

छत (शा देशांनी रानी, आब ना शांठीन छात्त । ১१% অধিকাচরণ গুপ্ত।

আগমনী-আডাঠেকা।

যাও বাও গিরি, আনিতে গৌরী, উমা বড় ছঃখে রয়েছে। मार्थिष्ठ अलम, मात्रवरहम, छेमा मा मा व'ला किलाइ ।

ভাক্ত ভিথারী জামাই তোমার,দোণার ভ্রমরী গৌরী জামার, উমার যত বসন ভূষণ,বেটা তাও বেচে ভাঙ্গ খেয়েছে। ১৮০

[आशयमी।]

देखबरी-प्राचा।

আমার ছঃধ পাশরা নয়ন-ভারা

আয় যা একবার করি কোলে।

अछाशिमी जनमीरत, छाक्या धकतात या या त'ला। কতদিন না দেখি তোনার, ছিলাম স্বামি মৃতপ্রার,

खीवरात क्षीवम कृष्टे, कामात क्षीवम निनि এङकारन । ১৮১

काकि-यर ।

কি ভনালে গিরিবর উমা কি ভবনে এলো।

ভবেরি ভবানী সামার ভবন করিল আলো।

छेमा शरी मा दर्शिता, दिल मंत्रम अस इ'ता, এবে নয়ন-তারা নির্থিয়ে, স্থাবি মম ছাণ্ডাইল। ১৮২

माभवाची तांश्रा

দঙ্গীত মুক্তাবলী। 500

অালেয়া-একডালা ১

जुहै कि अनि मा शोदी। আয় মা তোরে কোলে করি।

ছদমে রাখিয়ে বারেক, তাপিত প্রাণ শীতল করি। कान चार्छ वृश्विष्ट पूर्य, रहतिनाय आक हान पूर्य,

यात लाति शक्षमूब, काल मत् शतिहति। পূর্ণ হ'লো মঞ্লাচার, মঙ্গলময় আমার বাছার,

জাগমনে যায় হুরাচার, পুলকিত গিরিপুরি। ১৮৩ किलामनाथ मुर्थाशीधाय

কালেয়।—অভি। ।

अन मा. अन मा, ७ मा इत मत्नारमाहिनी। দ্বেৎদর আশাপ্য চেয়ে আছি গো জননি।

চিব্রলিন প্রাধীন, আমরা বাঙ্গালী দীন, স্থৰ আৰু। তিনটা দিন, পুৱা'লো স্থলায়িনি।

यक्रकृति উल्लाशित, मगतिनि ध्वकानिया,

বরাতর প্রদানিয়া, তোষ শিব বিলাসিনি। বভানন গঞ্জাননে, বাবী কমলার সনে,

ঘলবৃদ্ধি বিদ্যাধনে, আন ভভ বিধায়িনি। বোগ শোক দূর কর, যাতনা সন্তাস হর,

कवान सद्राक छद्र, ७ तथा विश्वनागिनि ।

অধীন জীবন-ক্রেশ, তুর্মশার তীর শ্রেষ,

সকলি কর নিংশেষ, অমঞ্চল সংহারিণি।

আলক অভতা নাশ, বাড়াও উৎসাহ আশ, দংশার সমরে শক্তি, দেও শক্তি স্বরূপিনি।

পাপতাপ নাশ কর, কু-ইচ্ছা ছ্মতি হর, মনোবাছা পূর্ণ কর, মুক্তি-মোক-প্রলায়িনি ॥ ১৮৪

রাখালদ্বাস নাগচৌধুরী।

[विषया।]

বেহাগ-একভালা ৷ ভূমি গো রজনী।

জগৎ-যত্ত্বণ-হারিবী, তিতাপ-বারিবী,

প্রভাতা হইও না ধরি পায়।

প্রভাত। হইলে প্রাণের উমায় দিতে হয় বিদায়। কত ক্লেশ প্ৰাণ সইল, ভবে উমায় আনে শৈল,

(क्यान वन ना रेगन, विनाय निव रेगनकाय।

তারা আমার নয়ন-তারা, দে ভারারে হ'লে হারা,

इत रा क्षीतम-हाना, घडिरत वियम हात । ১৮৫

ক্লকধন বিজাপতি।

रेष्ट्रवरी-अवकारी।

কে নাম দিল ত্রিগুণধারিণী।

क नाम त्राथएइ निखातिवै॥

यन, मा ठटक खान छेमा, कात कारह कठ मा,

रदाष्ट्र जानतियै।

आमि मार्थत डिया साम दत्ररथिहनाम,

উমা গো আমি আজি তে৷ তনিবান,

দবে নাকি রেখেছে ভোর নাম ভবের ভয়নাশিমী

नशील मुकारनी। 380 পুথের তরে তোবে হরে দঁপিলাম, ছঃখে ছঃখে কাল হয় অবিরাম, কে দিয়াছে মা তোর ছঃথ-হরা নাম ? আমি তো জানি হঃথিনী। मनामत्मत घटत कह भूमा मना, क ट्यांगत मांगी त्वर्थक जनमा, मागतथी विक काल जात मना, কে নাম দিল ভব ভয়-হারিণী ? ১৮৬ দাশরণী রায় ভিমার উক্তি। জ্নই—আড়াঠেকা। কাঁদে খে। পরাণ আজি, তোমা দবে ছাড়িতে। বিধি জামে কৰে পাৰ, ভোমা দৰে হেরিতে। क्षार्य क्षार्य मिना'रव, - (धनिकाम धूना न'रव, থেলিত নগনে পুথ, মুখভরা হাসিতে। कछ कि य गरम इत. गरम हे छ। शात नह, र्वान विन करि, कहें भादि मा (य दिलाउ) कद छ'ति थ'रद कहे. जून मा आयारत गरे, এবে গো বিলায় হই, পতি দনে হাইতে । ১৮৭ বাজকুক বার ! [विख्या-मधीछ।] ললিত ।

প্রচে প্রাণনাথ গিরিবর হে, ভয়ে তত্ত কাঁপি'ছে আমার।

कि छनि शालन कथा, नितान काशान ह

বিছারে বাদের ছাল, ছারে বনে মহাকাল, বেরোও গণেশ-মাতা, ভাকে বার বার। তব দেহ হে পাষাণ, এ দেহে পাষাণ প্রাণ,

এই হেডু এডকণ, না হল বিদার।

ভন্যা পরের ধন, বুঝিয়া না বুঝে মন, হায় হায় একি বিভূষনা বিধাতার।

প্রদাদের এই বাণী, হিমগিরি-রাজ-রাণী,

প্রভাতে চকোরী যেমন, নিরাশা স্থার । ১৮৮

বামপ্রবাদ দেন।

আলেয়া—আভূগেমটা। वामात के छत्र मत्म, विषया-नगयी-नित्म

অকুলে ভাসাইয়ে হাবে শিবে শিব-ভবনে।

मनभीत मिनि इ'तन जनमाम, অন্ধকার করে হবে অন্তর্জান,

করিবেন তর্গে স্বস্থানে প্রস্থান নিজ পরিবার দনে। তাই করি প্রার্থনা করি খোড় হাত,

राम अ गामिनी जात ना श्र क्षां छा,

আর যেন উদয় হয় না দিননাথ, এই ভিক্তে চরণে। ১৮৯

एकाव्यमन कोन्ती।

[विभवा-नगरी 1]

ললিত-বিভাগ-আড়াঠেকা।

(यदा मा, तकमी। आक्षि नदा छातानला।

रगरन कृति, नहामति, क नहान गारन !

সঙ্গীত মুক্তাবলী। 385 डिमिष्य निर्भन्न ति डिम्ब-अहरम,

নয়নের মণি মোর নয়ন হারাবে। বার্মাস তিতি, সতি ! নিতা অঞ্জলে, পেরেছি উমার আমি। কি দাভ্না ভাবে-

> ভিনটী দিনেতে, কহ লো ভারা-কুছবে, क मीर्च वितर-काना क्षमम कुड़ादन ? তিন দিন স্থা-দীপ অলিতেছে খবে

দুর করি অন্ধকার; শুনিতেছে বাণী---মিষ্ট্রম এ স্টিতে এ কর্ণ কুহরে ?

বিশুণ আঁধার হার হবে, আমি জানি,

নিবাও এ দীপ যদি-কহিলা কাডবে

নবমীর নিশা-শেষে গিরিশের রাবী। ১৯০ कविवद्ग अधुन्द्रम्म पंछ

আলেয়া--আড়াঠেক। ।

ভন গোরজনি: করি মিনতি ভোমারে। অচলা হও আলকার তবে, অচলারে দয়া করে।

সাধে কি নিষেধে দাসী, ভূমি অন্তে গেলে নিশি;

অস্তে যাবে উমা-শুলী। হিমালয় আঁধার করে।

কি বলব তোমার যামিনী, ভূমি ত অন্তর্গামিনী;

তভরের ব্যথা আপনি, শক্লি জান অভরে ॥ ১৯১ হরিনাথ মঞ্মদার শভূ-শ্বদর-বাসিনী।
ভামি ভাকি অবিরত, মা বলি নিস্তিত,

শছর সহিত, শহুর-মোহিনী।

। দেখ, তারা দনে শশী, অস্তে গেল নিশি,
পোহাইল তারা ত্রিমনী।

পূজाর সময় হ'ল ; উঠ শিবে।

শিব-মন্মোহিনী, শিবপৃজা কর শিব-সীমজিনি ৷

দিনে দিন গত, সে দিন আগত; হল কাল গত, শুন হরির রাণী;

হন কাল গত, তন হারর রাশা; কিসে চেতন পাব মা; মায়া-মিস্তাতে দলা অচৈতন্ত

ভূমি চৈতভা না হলে চৈতভা-রূপিণি। ১৯২
—— হরিনাথ মন্ত্রদার।

अन दर्कात्न कित छेया, यन या विश्वनत्त ।

তোমার মারে মা বলে মা, কে আছে তোমা বিনে।
। ছাথিনী জননী হ'বে, উশানী হাবে কেম্নে।

ভূমি আমার ময়নভারা, বিভারে বিদায় দিয়ে তারা,

তারা-হারা নহনে রব কেমনে ভবনে ॥ ২। ও মা তিন দিনের তরে আসিয়া,

্বিভাস কিবিট জং—কাঁপতাল।

নিবান আগুণ জেলে দিয়া, নিবয় হ'য়ে বিদায় দিতে বল গো কি কারণে।

*

প্রাণান্তে নয়নপ্রান্তে বেতে দিব না তোমা ধনে,

সাগর সিঞ্চন নিধি,

ভাগ্যেতে মিলান বিধি,

নিজ দোষে হারাই বদি, পাব না জীবনে । ১৯০

হরিনাথ মজুমদার।

ললত বিহাস—একতালা।

জামার উমা যার কৈলাবে, হিমালর করি শুন্ত।

নয়নতারা হলেম হারা, নয়নতারা তারা ভিন্ন।

জয়া দে পো মুক্তকেশীর কেশ করে পরিছেন্ন।

পুরবাদী দে গো জ্ঞাদি, মায়ের দিথান্ন দিলুর চিহ্ন।

তিন দিন না গত হ'তে, হব এদেছেন নিতে,

छेमा थरन विशास निर्देश, श्रम्य इस निरीर्ग। निर्देश कांधाद इ'न कामाद, वर्ग श्रूदी द्वति शृक्ष। इति दल मा कांगास, एन श्री विशास यात कुर्ग। ১৯৪ इतिनाथ मकुमनात।

आइ:धमें।।

ওচে মন্ত্রীবর অস ভার ভার, কেমনে সহিব তাই বল না।

[তছ-নিতত বুৰা]

বামাভা এক কন্যা, জিছুবন মাভা, দৈতাগণে বৰ করিছে তাছনা ।

> কত দৰ বল এত অত্যাচার, দৈত্যদল দৰ হ'তেছে ভারথার,

প্রাধন প্রত্তে ভারবার,

[নিভজের প্রতি ভক্ত।]

পারা-ভৈরবী---আড়থেম্চা।

'वन्त कि, ७ ता जाहे ! जुहे आयाद औरन धन । কোন্ প্রাণে ভোমা ধনে, দেই কালে কর্বো সমর্পণ। কোথা হ'তে এল নারী, কিছু না বুঝিতে পারি,

অস্থ্যত হ'য়ে তারি, মন হ'লে। উচাটন।

ছिল या गर्का, मकनि वहेन वर्का, সেনাপতি-আদি সর্কা, নারী করিছে নিধন ॥ ১৯৬

[নিগুরের উজি।]

बाबबाखी-वीशठात।

'(काथा (थरक जरना बामा त्मरे मञ्जनवर्गी।

হবে বুঝি হররমা জিভুবন-মোহকারিব। হেন সাধ্য আছে কার, লীলা বুঝিবে তাহার.

অস্থ্রদিগের অত্যাচার, দেখে এলো সে আপনি।

ठठुर्चुकां श्रद श्रामा, नना पारक खेनकिनी ।' ১৯९

দলীত মুক্তাবলী। 186 बाबाम-१९।

> क मगरत भरताभरत नवधनवत्री। রূপ নির্থি নিন্দিত খেন নীল নলিনী।

প্রভাতে ভারুর আভা, কিবণ চরণ শোভা, রণ শোভা করিছে ঐ রণরঙ্গিনী।

ভিজ লাশবধী কয়, সামাস্থা প্রকৃতি নয়, -করে ধরে নরশির হর ঘরণী। ১৯৮ দাশরখী রায়

रिक्-काल्यानी।

वान केतिहरू तन, कि तमनी (ए ताकन,

তোমারে নিদর বাম। কি জন্মে। এলোকেখ, কবে অসি, বোড়শী কুলকনা। ।

विवास घडिन टकटन, कि वास वामात महन,

करतरह मिनवा स्मारत, नातिरन व्यारन । ठल ट्र दांक्रम ठल, व्यांग क्टब व्यांगाक्त,

জকুল সাগরে কুল জার দেখিনে।

धरि हत्राप करि मिनलि, यनि ए नामरशिक,

লাশরথী গতি পার অতি যতনে ৷ ১৯৯ मागवधी दाव।

व्यवज्ञव्यी—१९।

প্ৰৱে ক্ৰন্ত বেনাপতি বণে ভক্ত দিও না। वर्ष विश्व खन्मशी करत बन्न करत मा ।

कामा कि गांड वर्षात, वादव खान तद मा दा, প্রাণ ভরে হাতে পেয়ে পরমার্য হারাইও না । ২০০

माणतथी त्रा।

क्रव ७ श्रक्तान प्रतिश ।]

(करवत छेकि।) যোগীয়া—কাওয়ালী।

राम यारे चामि मन इः १४।

দারুণ বিমাভার কথা শেল হয়ে বিধেছে বুকে।

जानीकीन कर जागात कुक यनि कुणा करत, পুনঃ ফিরে আস্ব ভবে কুটীরে।

নিদর হলে কুফ্খনে, প্রাণ ভাজিব বিষপানে,

নতুবা মরবো আগুনে বিদায় হই তোমারে রেখে ৷ ২০১

यमन याही व

স্নীতির প্রতি ক্রবের উক্তি।

লগিত-আঙা।

বিদায় হলেম গো জননি, মা বলে কি নিদ্রাগত গ এত পাধের ধাব তোমার, বিদার হর মা জন্মের মত।

পরপ্রাশ অন্বেবণে, মা আমি চলিলাম বনে,

যদি হয় মা দরশন—তবে হব সমাগত।

বিমাভার বাকা ভনে-দল হয় মা কলেবরে,

कि मांव निव महादाखादि अन्दिति कम यह ॥

मकीछ युकावनी। 386 [সুনীতির উক্তি।] বাস্থাত্র—পোন্তা। কোথা আছ হে কৃষ্ণ এত কষ্ট সইতে নারি। পার কর ছঃথিনীরে, ছঃধ-নীরে দিরে অভয় চরণ-তরী বনে দিলেন স্বামী, নিরাশ্রমে আছি আমি, तक ज्वरमद यामी, जरवर यम ज्जाव-हाती। खरनिष्ठ नाम शीनवन्तु, কুপাময় কুপাসিলু, দাও হে চরণারবৃন্দ, পতিত পাবন হরি। ২০০ [স্থনীতির উজি।] विविषे - (वेका। अव गांत्रि कानिए वाकुन।

त्त ७ इ:थ-गांशरत क बांत क्लारत क्ल । ভনিত্রাছি রামায়ণে, কৈকেয়ী দিল রামকে বনে,

স্থকটি মোর পুত্র ধনে, প্রতি হলে। প্রতিক্ল ।

নুপতির পত্নী হয়ে, व्याष्ट्रि वनवांशी इत्य, अप दद छोत सूथ छाता, तुनि हाताहेनाम मून । २०৪ लाभगभी बार ।

লণিত-একতালা)

ভবদা ভোমার নাথ !—ভবদা ভোমার ! তোমা বিমে দীনহামের, বল কেবা আছে আর ?

অধন পাতকী বলে, তোমা বই কে লবে কোলে,

পাপান্থার অভিনাবে, দ্যা হবে আর কার ?

रित्रश्व यिख।

পিতা বই কে মুছায় বল ? जनरम्ब नम्बन-जन, কে আর করে শীতল, তাপিত প্রাণ তাহার? দাক্ষাৎ পাপের অংশে, জন্মেছি ছে দৈতাবংশে, আপনি আপন ধ্বংদে, করিতেছি পাপাচার! बळान करवाथ ट्राल, পिতृ-बाळा व्यवस्था, পিতে তারে, তার তরে, করে কি হে পরিহার ? ক্ষমার জাধার তুমি, নানা পাপে পাপী আমি, णाहे कि दर विश्वयामी, कतितव मा मीतम शाद ? কেহ কল্পতক্র-কাছে, কাতরে যদি হৈ যাচে, পাপী দেখি, করে না কি, সে বাসনা পূর্ণ তার ? নিজ্ঞণে সরাময়। দেহ দাসে পদাশ্রর. এম ওহে মনোময়, মনোমন্দিরে আমার-मुनित्त यूगन कांचि, यनि তোমার श्रान दाचि, যায় প্রাণ, যাক তায়, মমতা কি আছে আর ? ২০৫

ললিত-একতালা।

আজি কি স্থানি মম-আজি কিবা ওভক্রণ। হরি-প্রেমায়ত-লোভে করিব গরল ভক্ষণ । रित द्वारम निवलारन, रिन स्वामि मनि श्वारन, अत्र मम ভागा मम, हत्व कि बाद्या कथन ?

অমুক্ষণ পাপে ভাপে, অনিভেছি অমৃতাপে, তাহে হলাহল তাপে, যদি আরো অন্ধ তাপে-

আছে কি সভাপ তায় ? না হলে যভগ্ত-কায়, কে কবে জানিতে পায়, ছায়া স্থদ কেমন ?

यनि इति भन धान, यनि इति-छन-भान, যদি হরিনামায়ত, পান করে থাকে মন-

তবে আর হলাহল, আমায় কি করিবে বল १ नर्ल-दित्य, मत्त कि तम्, ख्रशांभाशी एवरे कन ? २०७-হরিশ্চল মিত্র

[প্রহ্লাদের মাতা করাধুর স্থীদ্বরের গান।]

ঘট-একতালা।

ভিলেক দাঁড়া ঘাতুকগণ! चिनव कदि, करत थति,

এক বার দেখা বাছার চাদবদন ! জানিদ তোরে কত আদরের প্রফাদ,

তার এই দশা এ कि পরমাদ!

(कन, ना श्विष्ठ गाव, गाव गाविन वान

অপবাধ বাছার হোল কি এমন গ

वानी, बाद्य कारन करत, वित्रू शांश्र करत, কেন ভার বেঁধেছিল্ করে করে করে ?

वाहा, त्रम कि लाय करत, क दा छाड़े क दत,

আগে বরা খুলে দে রে, হাত পার বন্ধন।

গুমে কুমারের ছঃথের সমাচার,

মহিবীর দেহে প্রাণ নাই রে আর,

इर्स, जेवामिनी श्राप्त, जिलाइन दश्यात्र, একবার দেখা তার তার হৃদয়ের রতন। ২০৭

হরিশ্বস্থা মিত্র।

[মাভার প্রতি প্রজ্লাদ।]

বিভাগ-একতালা।

মা গো, কেন কর ভয়।

অভয়-চরণ, যে লয় শরণ,

ভয় ভারে করে ভয়।

হরিবারে প্রাণ বিষের কি,শক্তি ? হরিপদে যদি থাকে মম ভক্তি.

मित्न मश छात, हाल अक बात.

বিষ হবে স্থা সম।

मा ट्यामात कठेरत, विषम कर्छारत

त्य गमत मम छे० शामन.

थ्यम, मिक धार्यमात्रं, हिन मा सामात्र,

রঞ্জিলেন আমায় কে তথন ?

না ডাকিতে হেই নিজ গুণে রকে.

नमा त्य मनग्र जनारमञ्ज भएक,

কাতর বচন, তুনে লে এখন,

निर्देश कि लेगां अप ?

পঞ্চত দিয়ে, যতনে গড়িয়ে মনোহর এই কলেবর।

मश्रीक मुकावनी। 205 (यिनि) इरम् कुलावान, निरमन खानमान, रिनि এই জীবিতেশ্ব, তার ভজনার, যদি প্রাণ খায় খাঘ্য গণি মনে, কোভ কিবা তায়, काताधिय इति, यनि श्राट मति, করিব শমনে জয়। ২০৮ হরিশ্চল মিতা। িগরব পান করিয়া প্রজাদ দৈত্যগণের প্রতি। ভৈরবী-জনদ তেতালা। কি অমিরে আমার দিয়েছিল, ওরে দৈতাগণ! कारत भान, कुड़ाला खान, चारह कि भाग अपन। নিয়ে বিষপূর্ণ পাত্র, হরিনাম শ্রিবামাত্র, হলাহল স্থার বল, করিল রে বিভরণ। হরি কেমন দ্যাময়, পেলি ত তার পরিচয়, গরল অমিয়া হয়, নামের মহিমা এমন। দর্মণক্রিমান হরি, তোরা তারে ভাবিদ অরি, এ কি ভ্রান্তি মরি মরি । ভাল হরির বিভ্রম। বাছবলে হ'রে বলী, গণিদ নে ভার ভুচ্ছ বলি.

দেখ রে বাবেক হরি বলি, জ্ভাবে তাপিত জীবন। ২০৯

ভৈরবী—ক্ষেত্র। নাহি চাই রাজ্য, ধন, জন, ও যে ভক্তের জীবন। इतिकल गिल।

দেহি এই বর, ওহে পীতাম্বর ! যেন নিরন্তর ভাবি জীচরণ ছে। নাহি চাহি ইন্দ্ৰপদ বৃদ্ধপদ.

কি ছার মিছার ধন রাজাপদ, गिरवंत मन्नम, जव रश्हे भम,

দেহি দাসে সেই পদ কোফনদ-

মম এই আকিঞ্চন হে। ভাগ্যগুণে যেই চিন্তামণি পার, সে কি নাথ, আর ভুচ্ছ কাচ চার ?

ভূমি বিভো, হও স্থপদর যায়,

সে কি ভূলে জার বৈভব-মায়ায় **গ** जुमिहे नांधरनंत्र धन दह।

সাবজ্য, সালোক্য জীবস্থুক্তি আর, কিছুতেই নাই বাসনা আমার,

ও হে বিশ্বাধার ! প্রীপদে তোমার,

থাকে যেম দৃঢ় ভজি অনিবার,

দাসের এই মিবেলন হে। ২১০ हरिक्छल मिछ।

সিন্ধ জৈরবী—যং। কোথা হে অনাথের জীবন, জাজি বৃকি মোর জীবন গেল।

धर कीरानत कीरान, कीरान-मारक छरकात कीरान ताथ्रिक इन अ

শত্র-শন্তটে উত্তরি, হরি এ দাসে রূপা বিত্রি, দেহ চরণ-ভবি তবে ত তরি এ সাগর সলিলে।

मजीक मुकावनी। 148 গুণসাগর আজি আমারে, ভুবাও যদি এ সাগরে, তব কলন্ধ-সাগরে তোমার ভক্তের হরি নাম ভুবিল। ২১১ भागवधी वाध। [পিতার প্রতি প্রফ্রাদের উক্তি।] আলাইয়া वि विठे-একতালা। পিড:, কর এই ভিকা দান ; তাজ পাপ অভিযান, रुदि-माम न'रव, कीवन्यक र'त्रा, अक्लारमत्र दश छोन। ভূমি পিতা আমার ধরণী-ঈশব, তোমার আমার পিতা অনন্ত ঈশ্বর ; ভারি শান্ধি কোনে, ইহ-পরকালে, সকলে লইব স্থান। রছ সিংহাসনে নাহি আমার আশা: हति-शताबुख दकरन छत्रना ; श्वनि-निश्लागरन, यगा'रत रम धरन, কর্বো নিতা স্থাপান। कति-शरू जाया व हां शरत. অনলে গরলে কি ভর মরণে ? नशास्त्र दति, निरत्न भनकती, কবিবেন পরিত্রাণ। সভা সভা পিতঃ এ প্রতিজ্ঞা করি, এই স্তভ্নাবে আছেন আমার হরি:

দেগ যদি পিতঃ দেখাইতে পারি,

"ভক্তের অধীন ভগবান।" ২১২ वानमण्डा यिव।

[প্রজ্বাদ চরিত্র।] रुतिसाम वर्ष छानदामी।

তাই বলি পিতা গো আমি দিবানিশি।

সে নাম স্বরণে দিহরে পরাণ, পুলকে অঞ্চবারি। নামে স্থধা করে, পির প্রাণ ভ'রে, আনন্দ

দাগরে ভাসি। ২১৩

কীৰ্ত্তন।

রাজকুঞ্ রায়।

অন্ত যাতনা ভূগিতে হবে না অনন্ত আনন্দ খেলিবে প্রাণে।

আমা সবার প্রতি, যে সবার মতি.

সে স্বার গতি শুধু এখানে।

प्र ध्वां छल, भाभ-छाभामल,

পুড়িদ কেমরে জীব.

আমা চারি জনে, স্থান দেবে মনে,

ञ्चाम नित्न ज्ञांन शांवि अथारम ॥ २३८

बाककृष्य बांग ।

कीर्खन-(लम्हे। ।

তোর নাম রেখেছি হরিবলা।

मरमत नार्ष ७ लामात मन,

থেলনা হবি নামের থেলা।

মঙ্গীত মুক্তাবলী। 300 त्थारम त्यारथ एकि माहि. গড় না হরির চরণ ছুটী, আয় ছ'জনে সেই চরণে পরিয়ে দি বনকুলের মালা॥ রাজকুঞ্ রায়-কীৰ্ত্তন-ঘেদ্টা। তালে তালে পা ফেলে হরি বলে নাচি ভাই। গ'লে গ'লে রা ভূলে হরিনামের ওণ গাই। হাতে কর তালি দিয়ে, স্থারে তালে লয় মিলিয়ে, इति बार्यत जिका पिरा, इति बार्यत जिका हाहै। २३७ রাজকুক রায়। कीर्वम--(वम्मे। इति संता नवारे नाटा, अमनि हति नाटमत नीना, সাগর জলে হেলে ছ'লে, বহর নাচে তাল বেক্রালা। छुडे कमाय महात गठ, निकृम राष्ट्र थाकिन अठ,

बाह बा ता यन हति द'ला. कु'फ़िरा गारव खारवत बाका ह २३१

[হবিশ্চন্ত ও নলোপ্থ্যান।]
বাহার—আরু।
(হবিশ্চন্ত বনগমনকালে মন্ত্রীর উক্তি।)

বিধাতার লীলা-থেলা বোকা নাহি যায় ; মানব-দৌভাগা কেবল জলবিধ্পায়, হায় ॥

রক্তিক বার।

হরিনাথ মজুমদার

আজ যিনি সিংহাসনে, পূজা করে জনগণে,

কাল আবার তিনি বনে বুক্ষেরি তলায়, হায়। ব্যাকুলিত অন্ন বিনে দাকণ কুধার, হার।

হরিশ্চন্দ্র মহামতি, ছিলেন অবোধ্যার পতি,

মরি ভার কি তুর্গতি মুনিরাজ ঘটায়, হায়, রাজাপাট ছাড়ি রাজা বনবারী যায়, হার। ২১৮

(প্রজাগণের উক্তি।] বেহাথ—আড়া।

হরিকল্প বিনে হেরি অয্যোধ্য। জাধার।

অক্সাৎ গ্রাসিল আসি রাছ ছরাচার #

প্রতিবাদী প্রতিবাদে, শোক-অঞ্চ জলে ভাবে, ধরণী লোটায় দবে করে হাহাকার।

শোকানল জনত্ত্ব অলে, শব্যা ভাজি ধরাতলে,

পুররাদী পড়ে আছে দবে খবাকার।

নীল পতাকা ভূগোঁপৰে নীল বসন পরে,

भूरमत (भाव क्षकां करते, रेमना क्षनियात ॥ २১৯

विनाथ मक्समात ।

[दविकासत छेकि।]

কীম পলামী-আড়াঠেকা।

কপালে স্বামার বিধি একি বিধি লিখেছিলে গ

वन यान निरंत्र नाम दक्त भूनः हरत निर्म ।

754 সঙ্গীত মুক্তাবলী। তব লীলা লীলাময়, জীবেতে মিলায়ে রয় ভভাতভ ফলছয়, অভুক্রণ তাহে মিলে। তুমি অগতির গতি, অধিল-ভূবম-পতি, কি করিলে মোর প্রতি, চির-ছাথে ভাসাইলে। अथवा य यात लाख, भए तिजू उव दाय ; क वा मत्त्र भद्रिकार्य, मीर्नम एह, ना प्रविश्व ॥२२० রাধানাথ মিত [रेगवात छेकि ।] कांकि निक-तरामान। তাই প্রাণ প্রাণধন অমুক্ষণ ভেবেছে। থাকি থাকি ভান জাখি অভাগীর নেচেছে। যায় যাক রাজা ধন, নাহি তাহে প্রয়োজন; মিলে এ স্থত-রতম, সব সাধ মিটেছে। कि ता काख क ज्वास, खावश्रस नार मान. हल शाहे दशाद दरम, आहे मम इटल्ट्स । निर्म িরোহিতার এবং শৈব্যাসহ নিশাকালে প্রস্থান। ছায়ান্ট বলো-একডালা। ध्दत्र दालधन, मां क्रांनि क्थम. इ'दि दि असन, कि इ'ने, कि इ'ने हात । चाँथि-मीत शरत, श्रमश विमरत : তোরে প্রাণ ধরে, ল'য়ে বাইব কোথায়। ভবের কারণ, কাঁদিবি যখন, কি দিয়ে তথ্ম, যাছ ভূলাব ভোমাছ।

রাধানাথ মিতা।

क्षत्रे मनात्र—बाढ़ार्टका।

विधि यमि इ'न वामी, किन खिन विद्यवि,

ভাকে তাঁরে বারে বারে 🖺

द्राक्ष) थन तकुक्रन, গেল সব অকারণ ;

छवु खान शन मा ता। मूमि माल नव मंल, অনুতাপে প্রাণ কাঁপে

ध प्रःथ कहित कारत!

আমি অতি হীনমতি, ভবপতি মোর প্রতি,

छोड़े बुकि स्मर्थ मात्र ॥ २२०

িশবার উক্তি।

ভৈনবী-কাওয়ালী।

(হরিশ্চন্দ্রের গাত্তে হস্ত প্রদান পূর্কক)

উঠ উঠ প্রাণনাথ অভাগী-জীবন-ধন।

एक एक करत दिया कर जांथि उसीलन।

হেরি তোমা ধরাসনে, বহে বারি ছনয়নে; বারেক হে সন্তাসনে, জুড়াও তাপিত মন।

धकाकिनी विरम्पारक, जानि माती श्रूकमार्थ,

বলে আছি এই পথে, কর নাথ বরশন ঃ ২২৪

त्रावानाथ मिल।

[देगवात डेकि।]

টোড়ি জলো—কাওয়ালী।

करव गाँचे माथ दर्श दर भारत।

जनाधिनी देगता तानी, छा'त्त जून ना कथन !

নগীত মুক্তাবলী। 300 বারেকেরি তরে, मुशांशा चटत, প্রিয়া বলে ডাক মোরে, জুড়াই জীবন ॥ ২২৫ [रेगवाद विनाय श्रद्ध काल इतिकत्त्वत छेकि ।] विष्ठाम---काउपानी। কোথায় চল্লে প্রিয়ে জনম্বধাম করে অন্তকার। কেন বিচ্ছেদবাণ বিদ্ধ করে হরিবে জীবন-ভার। তুমি আমার নয়ন-মণি, জীবনের জীবাল্বা তুমি, (लट्ड्ड दक्षनी) তুমি আমার আলোক, স্থথের প্রদীপ, শান্তি-বারি এ অভাগার। ২২৬ বাধানাপ মিত্র। [श्रिकास्त्र व्याक्ति ।] वाववश्ली-वाक्षांद्रका । विधि आहे छव मत्म हिन। एक्।-ताम-शृहनकी भरतत किन्नती होते ! इदि भनी (य नमन, * ह्राटन नाहि कमानन ; আসিয়া পথিক জন, হার তা'বে কিনে নিল। শ্ৰীপম শুকুমার, বিকাইছ সাথে তার: कृदुन्ति अकि आयात्र, कनके सम तरिन । विक अहे अलाजरन, जालन जन विहरन, ज्यम दर्दे थारन, द्यम खान मा शहन। হা কুমার : হা প্রেরসী ! দেখা দাও হরা আসি ; ट्यायादनद क्षायतानि, व्यथम व'टक परिन । २२१ जे

বাগেনী—আড়াঠেকা। শোক-মাখা ঢাক-চিত্র ভীষণ ঋশ'ন !

भीतव धता-श्रुमती, गुजलह काल कति ;-নীরব বিহগ মরি, ভূলে গেছে গান।

विधान वनन छीत, कन्दान कृष्यम् शत ;

বিভৃতি চল্ম্যার, ধুলা ধুদরিত কেশ; -লয়ে দলে প্রতিদ্ধনি, নাজি রাণী পাগলিনী,

िका (जात हिल्क धनी, कैं। निरंश कैं। नाम । २२४ রাধানাথ মিতা।

্মত সন্তান-অক্টে শশ্মানে শৈব্যার প্রবেশ।

আলেয়া-একডালা।

णामात्र कि द'न, कि द'न, किन ह'न शा अमन।

व्यामि कृतीवरम शातानाम आश्वत तलम ।

व्यात क डाकिरत छ तत, 'भा' दान मधुत चरत, কা'র বা অধর ধরে, করিব চুম্বন।

নাথেরে হইরে হারা থিয়াছে নয়ন-তার। :

না ভকাতে আঁথি হারা, ভালা কপালে ভালিল ;-

গোপনে আসিল চোর, কাটিল মেহের ভোর,

व्याप्य कमरह त्याव, कविन इत्व ॥

त्रांशानाथ मिछ।

```
দলীত মুক্তাবলী।
502
 [ হরিক্স্ , শৈব্যা ও রোহিতাখের সিংহাসনে আরোহণ;
              (एव ७ अन्नतीशर्यंत गीछ। ]
                বেহাগ জংলা-একতালা।
         গাও রে জগতজন ( নবে ) মিলিয়ে,
       কুমুমদাম কৃটিয়ে, টাদ কিরণ ঢালিয়ে;
         গাও রে আনন্দে হাদর খুলিয়ে।
         গাও রে কোকিল নিকুঞ্চুলে,
         গাও রে মধুপ বদিয়া ফুলে,
         मदशी-मनिन उदम जुल,
         গাও নাচিয়ে নাচিয়ে;--
         शां अत्र कांनरम क्षत्र श्रिक्त ।
         গাও হে প্রম মধুর পরে,
         कानरम कानरम खमन क'रत ;
         নিশির শিশির প্রেমের ভরে,
         গাও স্থবাস মাথিয়ে ;---
         मरीम निर्मद मरीम द्राद,
         আছ রে বিজনে যে যথা সবে :
         গাও রে প্রকৃতি জাগা'য়ে ভবে,
         (क्थम-नश्ती जुनित्य ;—
         কাজি এ মধুর মিলমে মাতিয়ে।
                                      রাধানাথ মিতা।
```

[দময়ন্তীর উক্তি।] টোরী-ভৈরবী--একচালা।

বল্ব কি বল্ব কি প্রাণ দহে অমলে, নলের বিচ্ছেদানল জলে গেলেও জলে।

যাব জামি বমপুরে, পদরজ দেও মা শিরে।

গৃহে লয়ে প্রাণ-পতিরে আসি সহরে,

রাজ্য ধন ত্যাগিয়ে, বনে এলাম পতি লয়ে, বিধাতা বিবাদী হয়ে নলে হরিলে॥ ২৩১ অজ্ঞাত।

> ্[মলের প্রতি দময়ভী।] ধাধাল—একতালা।

বলি, যেন শারণ থাকে হে রাজন্ প্রাণধন। এ অধিনী দঁপিয়াছে তব পদে প্রাণ মন।

ভন এহে মহামতি, ও হে নিষধাধিপতি, আপনি হবেন পতি, বাসনা এমন।

विहरन छाहा नाहि बाबिव श्रीवन ।

ভाল यादा शत कत, कति निर्दित्तन । २०२ व्यक्तां ।

পাহাড়ী বি"বিউ—আড়াঠেকা।

হায় বিধি কি হইল লাকণ মনোবেলন।
কেমনে লিখিলে মম কণালে হেন লিখন।

ক্ষেনে লাখনে মম কণালে হেন লিখন।
বাজার নন্দিনী জামি, প্রাণনাথ ধরাম্বামী,

তাহে হই বনগামী, কে আছে, মম মতন।

नकील मुकावनी। 368 সে ছঃখ ভাবিনে মনে, প্রাণপতি অকারণে; ত্যজিরে গেলেন বনে, গহে না বে অদর্শন ॥ ২৩৩ बित्तव छेकि। আলেয়া-- জলদ তেতালা। কোথা গেলে প্রিয়সীর পাব আমি দরশন। প্রির্দী বিহনে মম দহিতেছে দদ। মন ॥ কি কহিব হায় হায়, বিনা লোবে জবলায়, ত্যজেছি এ হঃখ তায়, প্রাণে বাঁচিনে এখন। ২৩৪ [সাবিত্রী ও শকুত্রলোপাখ্যান।] (সাবিত্রীর প্রতি সভাবান।) थायाज-मधमान। কেন কি কারণ, হেরি প্রিয়ে মলিন বদন। क्रम कमन कांशिष्य, कति ए वाति वर्षभ । বৰ্ণহীন অন্তক্ষণ ; কেন চাক চন্দ্রানন; কেন ভাগে পুর্দন, অঞ্ত বৃচন। জ্বর উরত কেন, হইতেছে ঘন ঘন, শ্বাস বহে অভ্ৰুক্ত কিসের কারণ । ২০৫ অজ্ঞাত। [সভাবানের প্রতি নাবিত্রী।] পাহাড়িয়া—আড়াঠেকা। উঠ উঠ প্রাণপতি, ধরি চরণে হে। क्रिम (इ क्लाय পणि,मःळाशीम चाइ (इ।

রজনী আগত হল, অন্ধকারে আচ্ছাদিল, চল স্থা চল চল আশ্রমে হাইব হে।

(श्रीम क्रामि विमत्रश्र, কি কব আর তোমায়,

সব দেখি শৃত্তময়, ভোমার বিরহে হে।

কি লোয়ে দাসীর প্রতি, হ'লে প্রতিকূল-গতি,

উঠ হে করি-মিনতি চরণে ধরিয়ে হে॥ ২০৬ জজ্ঞাত

[ছত্মন্ত তপোবন-সরিহিত পথে।]

वश् श्रीषाळ—बाह्य । থর শরাহত মুগমুথং, কুত্সন্ধানমপিক্রতং

সুগয়তি রাজা।

চলতি পততি করোতীই খলু বাণ-যাজমং

মার্থী সহিতং সন্ধানমপিশং,

ললিতং পুকান্তং পালিত হরিণং কমল-কোমল শরীরং তপোবন শ্রিতং

তর্মা ব্রজন্তি ভরেন, হবিণ-শিশব ঈক্ষন্তে

মুছত্তবহুনুপকর প্রয়োজিত মধিলাং

ধলু বাগভীতিগতা, ধাবতি হরিণাঃ মুনিনাং শরণং,

म्तामिक मृद्दे। सूनश्चत्रा भाषद साथव वम्खि

मुणकिर नवमः । २०१ दांबठस ठळवडी ।

[ছম্মজের প্রতি মুনিগণ।]

ও হে নৃপতি মাধব মাধব ছরিণ-শিশু-জীবম।

वाषाल-अक्डाना ।

আশ্রম-পালিত বটে মুগর্থ না কর হমন ।

मशील मुख्यावनी। 355 তব হে শর অনল প্রায়, মৃগ-তুলারাশি দহিলে তায় তব সম লোকে শোভা নাহি পায়, ব'ধ না কখন। ২০৮ जांमहस हक्वा [তপোবনস্থ উদ্যানে হুমন্ত ইতন্ততঃ পরিভ্রমণ করিতে করিতে।] जिनकारमान-यश । রমণীর তপোবনে কি ভাব নেহারি, পুণা-নিকেতনে শান্তি সহচরী। কানন-পালিত, পশু যত ভাগিছে আনন্দে; माहि शिशा (वय कांत्र, (कह मरह देवती, সার্হ্মল হরিণে সদা স্থাভাব হেরি। ধরিরে ভুতান, পাখী খেন বেলগানে মগন, হ'য়ে আছে নিবস্তব মুনি-অস্কারী, ইচ্ছা রাজ্য তাজি হই বনচারী। ২৩৯ এ कनशी-करक श्रिवयमा, अञ्चल्हा अरः मक्खनात কাননে প্রবেশ।] পরল-আছাব मिश इन इन मत्य कामान याहे, নিয়ে বারি, সেচন করিগে তক্তলায়। দিবাকর-করে, লভারহকারে, তাপিত অতি মলিন হায়, (আবার) বারি দিয়ে চল ভূবি ভাহার।

(এখন) বারদিনে ভূষি চল প্রায়॥ २৪० রামচন্ত্রা চক্রবর্ত্তী

(শকুন্তলার স্বামী-গৃহে গমন কালে আকাশে वनम्बर्जामिश्यत्र मधीछ।)

ললিত—আন্তা।

चुर्थ थाक रयस दामीनम्दा। মায়ার পুতলি, স্নেহের কমলকলি,

छूमि जामालित मा ध कानरन।

गिन्छ কোলে নিয়ে, জ্ড়াইবে তব হিয়ে, আশীর্কাদ করি গো তোমা ধনে। ২৪১ ঐ

[স্থিগণের নিকট শকুস্তলার বিদায়।] वःगाउँ-चाका।

বিদার হই প্রাণস্থিগণ, দেও দেও ভুল না জামারে।

कम अन्तिव मम, नना द्वेश कहरत. कुछ मा यांचमा निरहिष्ट् वन मा, कुथम क'त मा मरमरू

यात्रिल मि नव कथा नरह ना नरह ना अखरत।

[মেনকার উক্তি।] শক্ষা—আৰা।

हांध, कांब, विधि त्कमन लाकन, রাজার চরিত নিঠুর অতি।

मकील मुकादनी। 366 কেমন ক'রে মা শকুত্তলে! মন প্রাণ দিলে ইহার প্রতি। दल्व वा कांग्र, फु: (श्रंत कश्रो, मा दूरक करत तथ्यम कारथा, अन्देशिकन, या र'वादा छ। र'न, চল চল এবে নিজ বসতি। ২৪০ तायहत्त हक्तवडी (ত্রুভের প্রতি মিত্রকেশীর উক্তি।) बारगाउँ-हरति। (হায়!) কেন এ ভাব, নৃপতি তব, বুকিতে না পারি। শ্রীমুখ মলিন, বল বল কেন, তাপিত তত্ত্বকৃচি। শকুত্রলা মনে প'ড়ে কি এখনে, অন্তত্যপিত পরাণ জানিব তা আজ ভাল করি॥ ২৪৪ ঐ (বছদিন পরে রাজাকে দেখিয়া শকুস্তলার উক্তি।) ভৈরবী-পোন্তা। खनव रहारू कम द्वति अ कामरम. नागीरत मदम कि ए'न का निरम। বুকি মম হারানিধি, দেখাইয়ে বিধি, পুন: যোৱে ছলিতে বাসনা মনে ৷ ২৪৫ ঐ

শৌরাণিক দঙ্গীত। (ছম্ম শকুন্তলার মিলন।) বেহাগ—আত্মা (আহামরি একি হেরি রূপ মাধুরী ব পতি পাংশে নতী শোভে হের প্রাণ ভরি ৷ (ও গোসই হের প্রাণ ভরি) খটিকার অবসানে, হাসিলেক তপনে, দেখ চেয়ে কমলিনী নাচিছে তাবে নেহারি। জন পেয়ে চাতকীর প্রভূরিত সম্বর, হাসিছে ভাসিছে রসে ভূবিছে নিজ পাশরি! সহকার পেয়ে আজি দেখ মাধবী লতা, ভাগিছে আনন্দে আহা তারে আলিক্ষন করি ॥ ২৪৬ রামচন্দ্র চক্রবর্তী। (बिमलगरवान।) [এমতের সিংহল গমনকালে পুলনার উক্তি।] বেহাগ-নগ্ৰমান। হায় রে কেমনে, ভোমাধনে, দিব রে বিলায়। শীতল শোকানল, নব হ'ল বাত তোর কথায়। বিমাতা ভোমার, বিষাধার বিষধর প্রায়; কত কথা কয়, সব প্রাণে সমু, मत्म करे वह, इरेट्न मम्ब ;---केंगि देश खनश्च, यां देव देव देकाशास ॥ ৱাধানাথ মিত। ১৭০ বঙ্গীত মুক্তাবলী। (খুলনাব প্রতি শ্রীমন্ত।)

मिका महाब—चाड़ाळेका।

যাই যাই জননী গো কর না বারণ।
স্থাধতে থাকিব আমি কর অঞ্চ সম্বরণ।

দেশত্যাগী পিতা ভরে, অপবাদ সবে করে,

যাব সে সিংহলপুরে জানিবারে পিভ্রন।

আশীষ এ লাবে তব, বিষয় বিপদ সব,

জনায়াদে পার হ'ব কেন করি'ছ রোদন। প্রধূলি মা তোষার. মাধার দাও আমার,

লয়ে পিত। পুনর্কার, জাদিব কিরে ভবন। ২৪৮

রাধানাথ মিতা।

[বজ-বৃহাত্ত।]

(নজের প্রতি মশোদা r) বেহাগ—একতালা।

ভন বজরাজ, স্পনেতে আজ,

দেখা দিয়া গোপাল কোথা হুকালে।

राम त्र ठक्षन है। त्र, अकन श्रीरा कै। त्र,

क्रमीन (त मनी (त मनी वर्ग)।

ील करकरत अवस्य अग्र

নীল কলেবর, ধ্লায় ধ্সর,

বিধুমুখে যেন কডট মধুর পর. সঞ্চারিয়ে ভাকে মা বোলে। এ।

কত কাঁলে বাছা বলি বর সর,

আমি অভাগিনী বলি দর দর,

নাহে অবসর কেবা দেবে সর,
সর সর বলি কেলিলাম ঠেলে।
খুলা কেড়ে কোলে ভুলে নিলাম ঠাম,

অঞ্চলে মুছালেম চাদের বদন চাদ,

পুন চাঁদ কাঁদে চাঁদ বলে এ। এ। যে চাঁদ নিছনি কোটি চাঁদ চাঁদ,

যে চাল নিছান কোটি চাল চাল, সে কেন কাঁদিবে বলি চাঁল চাল,

"বলেম" চাঁদের মাঝে তুই অকলম্ব চাঁদ,

ঐ দেখ চাঁদ আছে ভোর চরণতশে ৷ ২৪৯

कृकक्यन श्रामायी।

[বস্থদেবের প্রতি দৈবকী।]

বাছাল-একডালা।

যার যাবে প্রাণ কিসেরি সন্মান, দেহে স্বাকতে প্রাণ দিব না সন্তান।

ना इस कःশ-वाका--- अहे भाभवाका

ছাড়ি অন্ত রাজ্যে করিব প্রস্থান,

বনবাদী হ'ব বনফল খা'ব,

নির্জনে ছ'জনে পুত্র নিয়ে রব।

হেরি চন্দ্রানন, জুড়াবে জীবন,
যদি হয় মরণ করবে পিগুদান। ২৫০

यान इस मन्न कन्नत्व लिखनाम । २००

्र वाशकक देववाणी

```
সঙ্গীত মুক্তাবলী।
393
            [ বলরামের প্রতি যশোদা। ]
                     थाका ।
ও বাছা বলরাম রে গোপাল আমার দিলাম তোর হাতে।
  দলে দকে রেথ গোপাল, দিও না দূর বনে যেতে।
    निकटि চরাইও ধের, ছ'ভাইতে বাজা'ও বেণু।
  বোদেতে ঘামিল তন্ত্র, বিশো তমালের ডলেতে।
গোপাল আমার কেলে সোধা, ছথের বার্তা কি তা জানে না।
    কির সর নবনী ছানা দতে দতে দিও থেতে 1 ২৫১
               [यत्नामात्र छेकि।]
                     (माडा)
   ঐ দেখ্রে ছথ্বে আমার বসন ভেদে যায়।
   ওনেছি নারদের মুখে শতবর্ণ পর,
   भित्र कित नत निव तत छोत्र होन नम्दन ७ तत कनधत ।
   इथिमीत जुल तन तत,
   মা বলিয়ে এক বাব কোলে আয় দারকার ॥
                                    मुठित्राम मुधा।
              [ यत्नामात छेकि। ]
               দলিত যোগিয়া—আড়া।
 হার আমি কি করিলেম, পেয়ে রক্তন হারাইলেম,
      . পরের কথার ঘরে দিলেম, জনল গো।
 অক্র বা কোথাকার কে, সে আমা সবাকার কে,
ভাহাকে বা চিনে কে, সে কেন নীলমণিকে,
       ट्यारत मिन द्या । २००
                                      ভাজাত।
```

গ্রহন বনেতে—আমার নীলমণি আজ বনেতে থাবে না।

নিশির শেবে, দেখুলেম স্বপ্নাবেশে শোন বলাই বলি ভোৱে—ছ্রাছা কংশের চবে,

নিবে মোর কৃষ্ণধনকে চুরি করে। আমি শোন বলাই তাই বলি—বে ছথের নীলমণি

জানে রোহিণী—জামার নীলমণি আজ বনেতে যাবে না ॥ ২৫৪

[বলরামের প্রতি যশোলা।]

नीनमनि-धन निव मा आव शार्डिक ।

বলাই কিরে যা তোর পুরুতে। জামার একেলা নিমাই, মা বলিতে নাই।

গোপাল যদি নিবি মনে, পাবাধ দে মোর বুকেতে ৷ ১৫৫

অঞ্চাত।

[গোৰু গীত।] কুমনিশ্ল-একতালা।

হারে রে রে রে রে, ওঠ রে কানাই।

दिना इ'न हम, हम शादि याहे।

আয়রে কান্ত আয় ;

ওঠরে গোপাল দাঁড়ায়ে রাখাল পথপানে দবে চায়।

দদ্মীত মুক্তাবলী।

বেলা হলো চল গোঠে খেলা করি,

কদমতলায় বাজাব বাঁশরী, দাঁড়ায়ে পার পায়। वनकृत कृत्त नाकाव टावत, आह बाह कास छैठत छैठत,

वाक्न थम, नाहि छाँन त्वर्, कानरम नाहे यात्र। শুন হাস্থারত্বে তোরে ডাকে ধেরু, বনে খেতে নাই চায় ৷ ২৫৬

গিরিশচন্দ্র ঘোষ।

[तनदास्मद श्रक्ति (भाषान ।]

বলাই ডেকো না, মা বিদায় না দিলে যাওয়া হ'বে না। আমি মারের আজ্ঞাকারী, আজ্ঞা নৈলে যেতে নারি, আমায় নিতে হ'লে পরে, মাকে কর শান্তনা।

পোঠের অতি বেলা হলো, ধের দব গৃহে রইল। व्यामि शास्त्रे शास्त्र भरत मा एका खारन रीक्टन मा । २०१

[श्रानात छेकि।]

वरना वरना मात्रन मृति मण्याय अहे कृत्रश्व वसाधात, चिवानिश बलवाशी करत शहाकात ।

र्केरन दकेरन बरणव ताथान बुनारक नुहात, গোপাল বিনে ব্ৰজের গোপাল উদ্ভূত্ব ধার।

শত বৰ্ণ কুফাহার। এ হংখিনীর বাঁচা ভার । ২৫৮

আনশচল মিত্র।

অজ্ঞাত।

[শ্রীদামের উক্তি।] বদন্ত-তেতালা।

ভাই রে শ্বন বল রে শ্বন উপার কি করি বল্ ? কেবল রিপুবল, হইল প্রবল, কানাই বিনে রন্ধাবনে

ছৰ্বলের জার কি আছে বল। পুন কি কালীয় দহে বিহজলে প্রাণ দহে,

কিবা দাবানন দহে, দহে বৃন্ধাবন সকল। দেখি আর দেনেক ছ'দিন,

হদি বিধি না দেয় স্থালন, তবে আর কেন দিনের দিন,

मिन शर्थ मिन काठों है विकल । २०५

कृष्णक्रमण (शाश्वामी ।

मधुकारमह एत ।

(দেখ্লান বত নারী বনে মীরে—হর।)

দেখতে যেন কাঞ্চালিনীর মত, না হইলে কাঁদিবে কেন এত।

গোপাল আয়, গোপান আয় বলে, করাঘাত হানে কপালে, বলে এই ছিল কপালে, কাসতেম না রে জান্তেম যদি এত।

मूक करण, मूक जारा महामद मीरत,

रान मानम बाजित बाउउ मुक कर स्मादि ।.

श्तन का जिन ना बाति, होने त्य तालगाठावि।

এ দশা হয় তোমারই, দেখিলেম মাতারি কত শত।

मनीठ मुकावनी। মলিন বেশে এমন বরণ যেন রাজমাতা, ভনেছি গোকুলে আছে, রাজার এক মাতা, বল্যপি কালালি হ'ত, মনমত ধন চাহিত, ধনহারা কাঞালি নয় ত, উহার প্রাণ কেবল কুঞ্গত 🖟 ২৬০ रियानात छेकि।। আলেরা—গররা। ভ স্থবল রে ! এ ছবিনী নয় কাঙ্গালিনী, এখন আমার চিনবিনে বাপ। তোদের রাখাল রাজার আমি হই জননী। সবে মাত্র ধন, ছিল ক্রফধন, হারা'য়ে সে ধন, ছইলেম কালালিনী।

> কার কি আছে বল, জানিল নে স্থবল, ध जीवामव वन, कवन मीनकास्त्रमि । নিশিতে পপনে, দেখুলাম নীল রতনে,

ননী দে মা বলি করিছে বোদন।

হ'ল প্রভাত রজনী, देक दन मीनग्रिन. আশা করে আছি ছারে, ঐ দেখ নীয়ে ক্ষীর সর ননী ৷ ২৬১

क्रक्षक्रमत (शाश्रामी।

विद्यानात छेकि।] मबुकारनज छन ।

नित सुनि नीतमित ए पिन, आमात मान इहेल सि पिन

ফিরে কি আর হবে এমন দিন ?

যে থাকে না তিলেক ছেড়ে, জান্লে কি বে দিতেম ছেড়ে

গোঁকুল ছেড়ে সঙ্গে যেতেম দে দিন। ও মা যাই যাই ব'লে কারে বা স্থগায় গো,

নে রে খা রে ক্ষীরননী কে তারে বলে গো.

कारत वा वरन अनमी क वा एम्य की बननी, थाय कि दत रन कीतननी, पृथिनीदत मदन इय कि अकानन । २७२ मध्कान।

পরজ-ঠেকা।

কে আলি আমার রতনমণি বল গুনি।

এ মাতা পাসরি ছিলি, পেরে মাতা দৈবকিমী। ধর্ম মাতা পিতা পেয়ে ছিলি মথুরাতে,

পরের মাকে মা বলিলি মরি সেই ছথেতে;

माम छात्रात मनी मिरत, शिका त्राह त्युरमरत,

দে নবনী কোখায় পাবে, ঐ দেখবে রেখেছি ননী।

গোচারণ ভয়ে কিরে এসব আচরণ,

नत्मत वीथा था छाति र'नदा अथन :

কুপুত্র হইলে ভূমি, কুমাতা না হব আমি,

হদন কয় কি বল রাণি। কোথার তোমার নীলমণি। ২৬০

সঙ্গীত মুক্তাবলী। 395 অতিরিক্ত পৌরাণিক সঙ্গীত। [मक्यक - जाशमनी ।] ভৈরবী—আড়া তেতালা। ও গোজয়া বল জয়া কথন আসিবে. মনের বিচ্ছেদ-তম হেরি দে নাশিবে। গিরি গিয়াছে আনিতে, বিলম্ব হ'ল আসিতে, কখন আসি অশিতে অস্তেতে বদিবে। शीति इहेरत उक्षन, धतिरत्र यम अक्षन. मा वल धन क्षान क्षमा जिमित । গত যামিনীর শেষে, দেখেছি স্বপ্নাবেশে, আমার দিওবে বদে, শিব দক্ষে শিবে। দে হইতে উৎকটিতা, আছি ধুলায় লুটিতা, স্বপন-বাক্য গভিতা, বিধি কি করিবে। ২৬৪ আভতোষ দেব ভৈরবী—আড়া তেডালা কি অপরূপ হেরিলাম গিরিরাজ। গত নিশির প্রপনে, কেবি উমা চল্লাননে, আভতোগ-জ্বাপনে, বেড়ি হোগিনীগমাজ। यन गम हित नटर, ति भूव त्रिक्ट छाटर, কে বুঝিবে মরম-গাতনা,---শুন হে ভূধৱস্বামী, কেমন কঠিন ভূমি. তনর। পাভরে আছু, ভোমার কি এই কাজ। ২৬৫

যোগিয়া—আড়া।

রাণী গো শুধু তোমারি বেদনা বলে নয়। দেখ দেখি গিরিপুরে, পশু পক্ষী আদি করে,

উমার লাগিয়া কুরে, দবে নিরামক্ষমর। উমা তোমার ছহিতা, কিন্তু জগতের মাতা,

লিপিকর্তা যে বিধাতা, তেঁহ মাতা কয়।

বিশেষে তোমার তারা, হর তিলোচন তারা,

ভেঁই পরক্ষার ভারা, বিচ্ছেদ না সয়।

অর্থহীন পণ্ডপতি, তাঁ'র সর্কস্প পার্কতী, তুর্ম। বিহনে হুর্মতি, তুনেছি নিশ্চয়।

রমাণতির এই মন, হর-পার্বভীরে আন, নফল কর নয়ন, হেরিয়ে উভয় ঃ ২৬৬

বী প্ৰায় কৰিছে কৰা ব্যাপতি রায়।

(वाभिदा-िंड ।

to the event of the second of the second

त जिम आमात करत इ'रत ।

আনিয়া সর্পমঙ্গলা মা বলে ডাকিবে

জানিয়া স্কানজনা মা বলে ভাকিবে হ'ব কি ও সভব, সুনয় চইবেন শিব,

হয়ে সরল স্বভাব, উমারে পাঠা হৈ।

বামানে লাম্য বিকাশ

বাছারে ল'মে বিরলে সাদরে করিব কোলে,

পুরবাদীগণে মিলে, আনন্দে ভাগিবে।

देशनारमंत्र वार्षा मयः, जिमान मूर्य छमितः,

ङर्गा विश्व निव, ख्याद मूर्य कानव, ङर्ग भरनद नाम ७ वानना शृतिहर ।

দদীত মুক্তাবলী। 300 এই মনে অভিলাষী, সহচ্বীগণে আদি, পথে আনিছেন কৈলানী, আমারে শুনা'বে। ষিল বমাপতির বাণী, ভন গো মেনকা রাণী আদিছেন উমা এগনি, বরণ করিবে। ১২৬৭ রমাপতি বায়। হোগিছা--আড়া। কও মা ছিলে কেমন ভিথারী শিবের ঘরে। ভনি মা সবার ঠাই, বশিবার স্থান নাই, লাশাতা শ্বশানে ফিরে। কত বা যতন করে, বাধিতাম স্থাদি পরে, তবু ক্ষণে ক্ষণে মা থাকিতে মানভৱে। रमधारन दक आरष्ट निरंद, ट्यामांब रमीबाया मरद, क ताथिल गमानदर । জার কত কথা গুনি, গলা-নামেতে পতিনী, তাকে নাকি শূলপাণি, রাথেন শিরোপরে। বিজ রমাপতির মন, আর না পাঠা'ব পুনঃ, বুকাইব জামাতারে । ২৬৮ ঐ বিভাগ-নালং তেৱাবা ৷ আর কেঁদ না প্রাণ-উমা নাহি পারি ছব দহিতে। এদ মা সংক্ষেত মম স্থাথ হাসিতে হাসিতে। ভোমারে কি বিশ্বরণ, হ'তে পারি কদাচন,

কি করি যা প্রামন, নাহি চান পাঠাইতে।

ভোমা বিনে অন্ধকার, হ'রেছে গৃহ আমার

একান্ত না পারি কার, অমনি কথা থাকিতে।

ত্ৰ জননী ছখিনী, তোমা বিনে পাগলিনী,

বিষয় দিব। যামিনী, আছে পভি ধর্মীতে ॥ ২৬৯ বনোয়ারি লাল।

আলেয়|—আড়া।

হর কর অনুমতি, যাই হিমালয়।

জনক জননী বিনে বিদীৰ্থ স্বর ॥

৩ জালা কি জানে মতে, জামি মা'র এক। কভে, গিয়ে তিন দিন জভে, র'ব পিতালয়।

গুহ গণপতি ল'হে, বপ্তমী প্রবেশা হ'য়ে,

आंत्रिय देवलास्य रु'त्त, नवनी छेत्रश्च।

कानि मा रमनका त्थरम, कस र्वाला दकेरम दकेरम,

মরেছে কি আছে বেঁচে, হ'ভেছে সংশয়। ২৭০ জগদাধপ্রদাদ বস্থ।

क्षत्रमावद्यमास् वस् । वहरिवस्त्री—बाहरवम्हे।

কোলে জায় মা ভবদারা, নরন-ভারা,

दक्षारण ज्याव मा ७५४।वा, सवस-छात्रा,

নাই মা আমার নয়নের তারা,

বা'রা তারা হার আমার মত হয় কি ভা'রা ? বিধাতারে আরাধিব, মা তোর মা আর না হইব,

स्मार कंट्स स्माहेर मात मात्रा क्रमन शाता । २१०

रम द दश देव लोहर जांच जोड़ो दिवसले दी हो । ४ ४३

সঙ্গীত মুক্তাবলী। 725 [मजी-वित्रह भित ।] ললিত খিৰিউ—ছোট কাঁপতাল। নিক্ পিরি-নক্ষিনী জিনহনের নয়ন ভার।। তারা হারা হ'য়ে আমি হ'য়েছি রে তারাহারা য় যে দিন তিন দিন বলে গেছে ত্বে সেই দীনতারা, সেই দিনে তথনি আমি দেখে'ছি রে দিনে তারা,-ভারা-শোকে বহিছে আমার ভারাকারা ধারা ৷ (মন্দিরে) যোগাসনে তারা রূপে, যা'বা আছে তারা সংপ, ও রে নন্দি তারা কি ধন জেনেছে তা'রা; ভোৱা রে এত কাল নিম্রে কাল ঘরে কাল হরিলি, জান হয় রে জানচক্ষে মম ভারারে না হেরিলি, জলাভাবে আকুল দিলুকুলে থেকে ভোৱা ৷ ২৭২ मागतथी राष्ट्र। । शार्वा विवाह शिव।) ছবট মহার-ভাগতাব। ভব-তিমিরনাশা ভবের আশাপথে কবে আদিবে, करत इत्थ मानित्व नित्त, नित्व कक्षमा क्षकानित्व । अभिउत्वरी अभिवादिने, अभावादन अन्यादिनी, আন্ত হঃধহারিবী আসি আন্ততোবে কবে ভোষিবে। নীলবরৰ নিস্তার, নীলকঠে কত আর, নিরস্তর নিরানক-নীরে ভাষা'বে : हत्रहार्थ हत्त्वातादाय, कालम हत्र लम खानादम, কবে ভূপা দাশবধীর ভব-ভাবনা প্রানাশিবে ট

কালেকড়া।

ত্রিলোচন-ত্রথ বিযোচন কর তে করুণা করে। বিদায় দাও আমায় অভয়া ল'য়ে যা'বে গিবিপুরে।

পাষাণী হ'রে অধীরা, অচৈতন্ত আছে ধরা, চৈতন্তরপিনী তারা ধনে কে চৈতন্ত করে। ২৭৪

কে এয়ান মহাশর।

[শার্লাৎসব।]

বাহার বসগু—ত্রিতানী (

মহিবাস্থ্র-মর্দ্ধিনী মহামায়া-আগমনে। আনন্দক্ষোত প্রবাহিত হইরাছে ত্রিভ্বনে।

कति सामा अञ्चलेत, छेश्मरत मरत निमधन,

ভঞ্জিভাবে ভাবি দশভুজার চরণ ;

ষ্ঠ চিত্তে পুশাঞ্চলি করিয়ে অর্থণ,

প্রযোগে কাটায় কাল ভবানীয় গুণগানে ৪ ২৭৫

রাজা মহেলুকাল খান।

द्राजा सर्व्यवान राम।

[যেনকার উক্তি।] কেনারী সম্পূর্ণ—একতানা।

আমি কি ভূলিতে পারি মম গ্রাণ-উমাধনে।

डिमा डिमा क'रत ला मा (केंट्र मित वालि किरन ।

विस्ति विस्ति । विस्ति स्ति ।

পার কত ফ্রেশ স'ব, কি করিব কোছা যা'ব,
হার। করে কোলে পা'ল ভাগার উল্লেখন ব

হায়। কবে কোলে পা'ব আমার উমা-রতনে।

मधीज मुख्यावनी । 368 छेमात मुथातिनम, - किनिता नातन हस, না হেরিয়ে নিরানক দেখ মম নিকেতন ৷ ২৭৬ রাজা মহেল্লাল খানা

> শিল্পর বিষয় বদনে মৌনাবলম্বন এবং উমা ভাঁহার कत्रवर शात्र श्रृक्तक ।] পিলু-বেন্টা 1 কেন বদিলে হে বিষয় বদনে।

इ. इ. व्यापनाथ,इ. इ. क्यापनाथ,इ. इ. क्यापनाथ, ল'য়ে কার্ছিক গজাননে।

কেন বহিছে অঞ্ধর। নয়নে।

এই নিবেদন তোমার চরণে ঃ ২৭৭

[গিরিরাজের উজি।]

বল মা মললা ভব দ্রকাঞ্চীন প্রমঞ্জ ।

জামাত। দৌহিত্রভা নকলে আছে ত ভাল।

পুৰবী—আড়াঠেকা।

তোমার তথ লইতে, মা পারি দলা আদিতে.

रमध क बुक्त रमरहरू भूस इहेग्रास्क् तम ।

ভায় তব অদর্শনে, বেঁচে মাত্র আছি প্রাণে, वाबि कर क्लानरन, रहतिया भानम क'न । २१४ थे

বল বল বল পিতঃ ভনিতে ব্যাকুল মন। নাহি পাই সহাচার মা মম আছেন কেমন। মম বাল্য-স্থিদলে, সবে আছে ত কুশলে,

প্রতিবাসিনী সকলে, আছে বল কে কেমন । ২৭৯

ताला भएएसनान थान।

[শঙ্করের প্রতি গিরিরাজের স্থতি ।] हमन-काल्यानी।

कुक्रम कंक्रण जिल्लाहन। निशयत कड़े। धर भीलक श्रे भक्षांसस ।

त्यामरकम चेम विकृष्ठिकृष्व, ব্যাল-উপবীত বপুতে শোভন,

ব্যাজচন্দ্রীত্বর পরিধান। গলে অভিযালা করে পিনাক ভযুক

ভালে শিশু শশধর ত্রিপুরাস্থরস্থান। দক্ষবজ্ঞান্তক সাধক-তারক কর বিভু কুপাদান।

তাজি রোব আগতোব, হ'বে মোরে সভোব, মনোহভীষ্ট কর পরণ ঃ ২৮০

[छेमार छेकि ।]

তৈর্থী-এবতালা।

প্রাণেশ্ব কার্জা কর ঘাইব পিরালয়।

वड़ विविश्व इहेशाइ किंड, क्रन देश्या माहि इस ।

সঙ্গীত মুক্তাবলী। 360 -পিতার সন্মথে হ'লে প্রতিশ্রুত, বঞ্চীতে আমারে পাঠা বৈ নিশ্চিত. দে যদী ত আজি হ'ল সমাগত, আর বিলম্ব না সয়। জননী আমার আছেন যে ছংখে, ভনেছ ত সব জনকের মুখে, ভাইতে বাদনা দ্বা ভাঁরে দেখে, ফুড়াই তপ্ত শ্বদয় # ২৮১ রাজা মহেন্দ্রনাল থান [শিবের উক্তি।] ভৈরবী-একতালা। তবে এস প্রাণপ্রিয়ে বিলম্ব ক'ব না আর। কার্ত্তিকের গণপতি সঙ্গে ঘাউক তোমার। কোথা গো আর বিজয়া, ভুই বা আর হা'ক জয়া, मिथिन रचन अख्या, कडे ना भाव आमात । পাছমধ্যে বিলম্লে, থেক সবে সন্ধা হ'লে; विश्व कना खाङाकारन, मानवारम शितिभूति ॥ २४२ थे [দুর হইতে গিরিরাজ উমাকে দর্শন করিয়া বারীর প্রতি।] थानारेश-काउरानी।

রাণি ছারে তব বাড়াইয়ে উমা ধন, সহ ভহ গজানন। আর লন্ধী সরস্থতী, জয়া নিজয়া প্রভৃতি,

করিয়াছে শন্তরীর বঙ্গে আগমন।

नांड शा बतांत्र रयम शृंदर नांड,

यक्लाहरण कर जाति नर्समझलान,

আজি কি সৌভাগ্য গো রাণি তোমার, বহিছে আমন্দ-স্রোত-পারাবার.

ভাক দব পুরমারী, উমায় বরণ করি,

পুরে লোক জরা করি, করি জয় উচ্চারণ। ২৮০ রাজা মহেন্দ্রণাল থান।

[গিরিরাণী উমাকে ক্রোড়ে লইয়। ।] ভৈন্নৰী-একতালা।

ও গো উমা আর গো মা আর করি কোলে।

জুড়া'বে জীবন, করিয়ে শ্রবণ, বারেক ডাক 'মা' ব'লে। পথশ্রমে দেদে বিক্ত কলেবর,

क्रूशां प्रशित क्राइ क्ष्यंत्र,

घड़ कीत मत दार्थिह मा धत निव वनन-कमरन।

कुहे ला या यम काक त्वत वन,

প্রাণের পুডুলি অমূল্য রতন,

মায়েরে ছখিনী করে দরশন, ছিলি কি মা তুই ভুলে ? ২৮৪ ঐ

गनिठ--वाड़ा ।

করি নতি উভূপতি থাক থাক এখানে। ভূমি গেলে অস্তাচলে হাবাইব ভারাধনে।

मग्मीत निवाकत. क्षकाम हहेल लब,

আসিবে নাজি শল্পর, লইতে উমা রভনে।

শণত ভাবি যে তারা, সে তারা জাখির তারা

লে তারা হইলে হারা, বাঁচিবে কেমনে প্রাণে । ২৮৫

দঙ্গীত মুকোবলী। [(यमकार डेंकि।] देखवरी--जिजानी। রেথ রেথ রেথ বাছা ছথিনীর বাক্য মনে। वर्ष वर्ष अहे काल अन मम निक्छान। ভূমি মম প্রাণধন, হেরি জুড়ায় নয়ন, অঞ্ধারা নিপতন, নতুবা হয় নয়নে। তোমার গমন দেখি, দেখ পৌরজন ছঃখী, रु च वानामधी, जस मिन वनस्य। পত भक्की काहि गरन, कुक्कन करत नीतरन, बें 'হা হতোনি'-রবে এলো প্রতিবাদী গণে । ২৮৬ রাজা মহেন্দ্রলাল থান। [গ্রিবিরাজ ও মেনকা সমপ্রে I] ভৈনবী-বিভালা। থাক অভিন্ন হাদরে প্রথে শঙ্করী শন্তরে। বিভন্ন প্রণঃ বন্ধ হো'ক দোহার অভরে। লেহ অন্তরাগ বেন, পরস্পরে বেটন, कतिया कर निमध, मना जानस-माग्रदा। আৰ দীৰ্ঘজীবী হ'য়ে, পুত্ৰ পৌত্ৰাদি ন'য়ে, विष्य अध्यक्ष क'रश, तमा देकलाम-निधरत । २৮१ खे [সাবিত্রী ও বতাবানের উপাথ্যান ।] (শতাবানের উদ্ধি।)। বেহাগ---একভালা ৷ मागांत यम कृतिता, था विक्रम वदम कि दक्षि संवदम, तिरी कि मानवी कतिन ७ इन ति

চাঁচর চিকুর নবকাদস্থিনী, ধরাতল ধায় ধরিতে ধরণী, কে কোথা দেখেছে স্থিরা সৌদামিনী,

বিচরে ভূতল-তল রে।

বদন-কমল ভ্রধার আকর, নয়নবৃগল নিশি ইশিবর,

किंगा यम ता कालकृष्ठे भन्न, मन्नाम विधिन त्ता লাবণ্য-দলিলে কনকের লতা, অধর দশন প্রবাল মুক্তা,

লাজ-সমীরণে সভত চকিতা, কেমনে গিরি ধরিল রে। ২৮৮ लानवल् मृत्याभाषात्र ।

> ি দাবিত্রীর পিতার উক্তি। 1 থাখাল-বোদা।

मत्रना वानिका, श्वाप्यत व्यक्ति, त्यायात्र मादिकी धरम । আজ কোন প্রাণে, গণিব কেমনে,

ভিथाती स्त्राम स्त्र । जामदर পानिका, दाश्मीत गाथा.

এ বিপুর কুলে আশার লভিকা,

কেমনে এমন কুম্বম-কলিকা, ফেলে দিব হতাশনে।

শতাপরায়ণা শতীকুল-চাদ,

ধরিতে পাতিলি কেন মতা ফাঁদ,

হায় রে বিধাতা দাধিলি কি বাদ দেখাইরে দতাবানে । ২৮৯ ঠ

[দাবিত্রীর মাতার উক্তি।] থাদাল-একতালা।

তনি প্রাণ কাপে মরি মা সভাপে করো না দারুণ পথ।

মা কি পারে মা সোণার প্রতিমা জলে দিতে বিস্ক্রম ঃ

120 সঙ্গীত মুক্তাবলী।

ফণিনীর মণি, ননীর পুতলি, त्रधायाथा यानी, (काकिनकाकनी,

क छादा जुलाल, कि मडाना (शनि, किम या ह'नि अमन। হায় কি কৃষ্ণণে, হেরিলি নয়নে,

মায়ার নিদান খোগী সভাবানে,

क्या तम मारिकी, म'रन, ना छोरन, ७ अरम छन्य स्वर्भ । १०० প্রাণবন্ধভ মুখোপাধ্যায়।

ি সাবিত্রীকে বিমর্ব দেখিয়া সভ্যবানের উক্তি।

वनिक-वासार्वको । কেন রে মলিন মুধ হেরি সঞ্জ নয়ন।

শ্রাম আতা ইন্দীবর কেন লোহিত বরণ। নন্দনকানন-সার, পারিজাত-পুশ্বহার,

दिनवर्गार्श बालाशांत शनांत र'न कृषत्।

রবির থব কিরপে, স্কীণ ভাতি দিনে দিনে,

মলিন ধুলার সমে কুত্ম-রতন।

कमद-वाक्टि निधि, यहि वा शिर्मन विधि,

প্রাণ কাঁদে মিরবধি রাখিতে নাহি বে ভান । ২৯১ এ

[সতাবানের উ**জি**।]

लिक-चाव्रांटक्रा।

না জানি কেন রে আজি শস্তর এত চঞ্চল।

ন্দা দশন্ধিত প্ৰাণ বুলি বিপদ ঘটিল ।

শকাতরা দীন মনে, হরিণী স্থির লোচনে, চেয়ে কেন মুখপানে, অঞ্চ বহে অবিরল।

তুণ জল নাহি খায়, কি ধ্যন বলিতে চায়,

ভাবিয়া আকুল যেন ভাবী অমঞ্চল। কে যেন করুণ স্বরে, বলি'ছে কর্ণকুহরে,

इति तन खान ভत्त, मिन कांत्र कृताहेन । २৯२ প্রাণবল্প মুখোপাধ্যায়।

> [यस्त छेकि।] রামকেলী —আড়াঠেকা।

এ কি অপরপ ফেরিলাম কাননে।

ঘোর তমোমল রজনী সমল, জ্যোতির্মার জ্ঞান হয়, ষেন আদি সতী মৃষ্টিমতী বিমলা এখানে।

বাসব-বছ্লসম, खक्रिन धहे खांव,

किए छेर्छ आब दक्त वानात द्वानरन।

অঞ্চতে অনল গতি, স্ভাপিতা ব্যুমতী,

এ দতীর প্রাণপতি হরিব কেমনে । ২৯০

[यदमद क्षिष्ठि नाविकी।

মুলতান-আভাঠেক।।

मधा कर तान वनि दह काउदा,

হুটী পারে ধরে দাসী ভিক্ষা করে।

পতির চরণ সভীর জীবন, পারিব না দিতে প্রাণ ধরে।

সঞ্চীত মুক্তাবলী। 256 বিলম্ব সহে না আর, কর দেব প্রতীকার, যুক্ত কর পাণ প্রাণ-ভারে। कहे करता मेशोमझ स्मर्था रचन मेरन तहा, প্রাণপতি পাই তব পুরে। ছথা র'বে সতাবান, সেই মম স্থ-স্থান, স্বৰ্গ কিছা নৱক ছম্ভবে । ২৯৪ প্রাণবন্ধত মুর্থোপাধ্যায়। মাতার প্রতি সাবিত্রী। বোণিরা—আড়াঠেকা। মা গো বিদায় লইলাম তব চরপে। याहे পতि मत्न हिंद निक्शिमत्न। না দেখিছ তাত যাত, ঘাই মা জনমের মত, মুক্তা-কালে খেদ বড় মনে। कविद त्मरे कान वानी, क्लिन बाब बननी, किनी शहाल मिन वाम । অপরাধ শত শত, করেছি মা অবিরত, क्या कत त्यहरा धर्म । कत करे जानीकांत्र भूरत रचन मन-गाव.

পরলোকে পাই সত্যবাদে ।

[यदनामात छेकि।] बाड़ारथम्डा-कीर्डरनत्र एव ।

আজকের মতন রেখে যা বলাই। গোঠে যাবে না রে প্রাণ কানাই।

বনে বকা করে বল কে, লামি ঘরে ঘা'রে হারাই পলকে,

এমন কানাই-ধনে দিয়ে বনে.

খরে কারে হেরে প্রাণ কুড়াই। তোরি অনুগত নীলমণি,

তোর কথা ভিন্ন খায় না নবনী, কানাই তোরি বাধ্য, তোর সুদাধ্য,

ভুই যা বলিবি কানাই ভনবে তাই।

মনের কথা ভন রে বলরাম,

ছেঞি ভাবি নিরব্ধি; ভুই বলিদ যদি,

আজ কালা এলে ভনলে বনের নাম.

यतः भामि छात्तव मत्त्र गाहे।

কারে বলি না বলি ভোরে.

খোপাল কেলেছে কালি খুমের খোরে,

क्नकराव वक मिक्निक कामाव मुका वर्खिछ मनाहै।

विल तमाणित वह वानी. कात करछ छार गरभारा तानी,

দদীত মুক্তাবলী। 338 দেখ গো অন্তরে, এই চরাচরে, তোমার গোপাল ভিন্ন গতি নাই। ১৯৬ রুমূপতি রায় ्रवा—वाम् । मिता अवमान इ'वा। धरन (कन शिलान सामात शुरू ना धरना। त्याशाल शांत्राहर तत्न, क्रांच्य आहि श्वशादन, কভক্ষণে আসবে গোপাল, অস্তাচলে স্থ্য গেল। লয়ে ধেন্তু বৎসগণে, ১ ক্লিয়ে রাখালের সনে, গেছে বুঝি দূর বনে খেলিতে খেলিতে,— কিখা সে উদ্ধত হ'লে, বলরামে না কহিলে, क्षांट वाकून र'छ, वृत्रि कांद्र या वनिना कीद नद नवनी न'रत, दरन काहि मूच राज्य, दशाशाल जामद्य दशद्य, मा मा विनद्य,--না দেখিয়ে প্রাণধন, চঞ্চল হ'ছেছে মন, दक दा यादव दुन्सावन, यक्षत शांबादक र'दना । २०१ রাউর—আড়া। वावी लाठांव दकान खादन। विद्-वनम चामिशास्त्र विविव किवर्ष । हत भूख निवन्ता, दर धरन (भरत्राष्ट्र कार्य, গোচারণে ভারে দিলে রাখালের দ্বে ! ক্ষীরের পুতলী জিনি, লক্ষের সঠনধানি,

(कमर्ग शांशां शांवी, शहस कांसरन।

श्रुकामन भन इंगे ; याहेरव क्यार । যহুনাথের সদাকাশে, দাড়াও দাড়াও গোটের বেশে,

মনোগন প্রেমোলাসে, দিব চরণে । ২৯৮

অকুর সধার্য।

[কংশের উক্তি।]

कि जानि कि दला जाभाव मत्न: कि गहरन कि अभरन, কৃষ্ণরূপ ছেরি ভুনরুমে।

ख्रहे-काङ्श्ली।

যদি না ভাবি লভবে, ভবু না বহে লভবে,

কি আছে তার অভরে, অভরে তা বুকিতে পারিনে। যদি থাকি আপন মনে, — না করি মনে,—(৩),

দে কেমনে মনে মনে উদয় হয় মনে—(৩),

মনে পাইনে মনের কথা, ভোমা বিনে মন দিয়ে কৈ ভনে।

ता निरक याहे त्य निरक हाहे, दन्धर कुक लाहे,-

ক্রম ভেবে কুফবর্গ, বুঝি ক্রম পাই—

কালরপ চিনিনে কে দে, নাম বুলি ভার ধ্বিকেশে, ধরিল আমার কেশে, স্থান বলে শেষে জানবে মনে । ২৯৯

১৯৬ দদীত মুক্তাবলী।

[অক্রের উক্তি।] বিবিট-মধানান।

হও রথ যাও বথে, এমন রথে।

তাজা করে ভাষ্য পথে, কেন জম পথে পথে,

পেরে স্থপথ ভুল না পথ, এখন চল রজের পথে।
পথের সংল মন হরি-বল, হ'বে পথের জয়,—

জেন গৰাই পথের পথিক পথের পরিচয়,—

ধর্ম-পথে রেথ যতন, যদি পথে হও রে পতন, হ'বে তোমার কালের দমন, কালীয়-দমন ভাব হলে ৮

সম্প্রতি ভূমতি —ভাইতে পাঠাইলে কংশ,

যে করে বন্ধাও ধ্বংস, তারে কর্বে ধ্বংস,

হ'লে হরির কোপের অংশ, কংশ যে হইবে ধ্বংস,—

হ'লে হারর কোপের জংশ, কংশ মে হউবে ধ্বংস,— স্থান কয় এমন কুবংশ, কি কাষ থেকে মথুরাতে। ৩০০

मध्कान।

[অকুরের প্রতি দেবকী।] দেওপরি—চিমাতেভালা।

যাচ্ছ यपि গোকুলে।

ৰ'ল ভার যেও না ভূলে,

পাবাণ চাপা মাথের বুকে, স্বচক্ষেতে দেখে গেলে।

যত হারী করে বন্ধন, তত ভাকি আয় ক্লবংখন,

गरम मारे इश्विमीत त्वलम, -- श्रांत यरणातात एक व

बनक्द बहुन व'ल छटन ह'ट्र खुरबनक,---

পাশরি র'রেছে জনক, গোকুলে পেয়েছ জনক ;